नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 317, नई दिल्ली, शुक्रवार 16 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिंदगी हमेशा आपको एक नया मौका देती है, सरल शब्दों में उसे कल कहते हैं।

02 यदि गुस्सा आपकी दैनिक जिंदगी और रिश्तों को प्रभावित कर रहा है, तो.....
06 शिक्षा का मंदिर या डर का अड्डा? छात्राओं की सुरक्षा पर अब जागो.....
08 लायन्स क्लब भीलवाड़ा सिटी ने बच्चों को किए स्वेटर वितरित

बच्चों में फैटी लिवर और सिरोसिस: नई महामारी का खतरा!

20-30 साल पहले नामुमकिन, आज स्कूली बच्चों की प्लेट में जहर

संजय कुमार बाठला

दो-तीन दशक पहले भारत में बच्चों और किशोरों में फैटी लिवर (NAFLD) या लिवर सिरोसिस जैसी बीमारी सोचना भी असंभव था।

ये रोग तब सिर्फ शराबी वयस्कों या हेपेटाइटिस-बी/सी पीड़ितों तक सीमित थे।

लेकिन आज हकीकत डरावनी है—स्कूल बैग के साथ ही बच्चों के लिवर में वसा जमा हो रही है, फाइब्रोसिस और सिरोसिस के केस सामने आ रहे हैं।

तेज शहरीकरण, जंक फूड संस्कृति और बैठी जिंदगी इसके जिम्मेदार हैं। विशेषज्ञ चेताते हैं: यह आने वाली पीढ़ी के लिए 'साइलेंट किलर' बन सकता है।

फैटी लिवर क्या है? चरणबद्ध खतरा नॉन-अल्कोहॉलिक फैटी लिवर डिजीज (NAFLD) में बिना शराब के लिवर की कोशिकाओं में चुपचाप वसा भर जाती है। यह धीरे-धीरे घातक रूप ले लेती है:

मुख्य चरण:

* सिंपल स्टिएटोसिस: वसा जमा, सूजन कम।

*** NASH: वसा + सूजन + कोशिका क्षति।**

* फाइब्रोसिस-सिरोसिस: स्थायी दाग, लिवर फेलियर या कैंसर तक।

* समय रहते बदलाव न हो तो कम उम्र में लिवर ट्रांसप्लांट की नौबत आ सकती है।

*** मुख्य कारण:**

* बच्चों की थाली में छिपा जहर

* कोल्ड ड्रिंक्स का कहर: फ्रक्टोज से लिवर पर सीधा बोझ—इंसुलिन रेजिस्टेंस, सूजन। दुबले बच्चे भी शिकार।

*** जंक फूड का जाल:**

* बर्गर-पिज्जा-चिप्स में ट्रांस-फैट, रिफाइंड कार्ब्स—पेट की विषैली चर्बी बढ़ाती।

* स्क्रीन की साजिश: खेलना भूलकर मोबाइल पर चिपके बच्चे—मेटाबॉलिज्म धीमा, वसा जमा।

* बचपन का मोटापा: शहरी इलाकों में 3 गुना बढ़ा—इंसुलिन रेजिस्टेंस की जड़।

विज्ञान की नजर में: कैसे फैल रहा रोग?

* नए शोध बताते हैं:

* फ्रक्टोज सीधे लिवर में फैट बनाता है,

* गट बैक्टीरिया बिगड़ते हैं,

* ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस सूजन पैदा करता है।

* भारत में बचपन का मोटापा 20% पार कर गया—NAFLD अब सबसे आम क्रॉनिक लिवर रोग।

*** नई जांचें:**

* अल्ट्रासाउंड,

* फाइब्रोस्कैन,

* ALT/AST टेस्ट से शुरुआती स्टेज पकड़ा जा रहा।

*** इलाज:**

* दवा नहीं, जीवनशैली!

* बच्चों के लिए दवा नहीं, लेकिन ये बदलाव चमत्कार करते हैं:शक्कर-फ्रक्टोज कम करें।

* प्रोसेस्ड फूड छोड़ें; फाइबर-प्रोटीन युक्त प्राकृतिक भोजन अपनाएं।

* रोज 60 मिनट व्यायाम,

* 8-10 घंटे नींद।

* शुरुआती चरण में 80% केस उलटे जा सकते हैं।

*** महत्वपूर्ण आंकड़े**

विश्व: 10-20% बच्चे प्रभावित।

भारत: सबसे तेज वृद्धि; किशोरों में सिरोसिस केस दोगुने।

खतरा:

1. डायबिटीज,
2. हृदय रोग 5 गुना बढ़ा।

निष्कर्ष:

1. बच्चों का भविष्य मोबाइल में नहीं, थाली में है।
2. माता-पिता, स्कूल और सरकार जागें—जागरूकता अभियान चलाएं।
3. समय रहते कार्रवाई से यह महामारी रोकी जा सकती है।

(जनहित में सूचना: स्रोत—WHO, ICMR शोध।चिकित्सकीय सलाह के लिए डॉक्टर से संपर्क करें।)

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

शिक्षा का मंदिर ध्वस्त! डर-शोषण का अड्डा बन गया—अब खड़े हो जाओ, कायरों!

शोषण का काला साम्राज्य: प्रोफेसरों की वासना, प्रबंधन की साजिश! (यौन उत्पीड़न का महामारी रूप)

खुशी नर्सिंग कॉलेज की छात्राएं धरने पर बैठीं।

संजय कुमार बाठला

शिक्षा मंदिर'? हाह! हरियाणा से देशभर के कॉलेजों से चीख रही छात्राएँ — यौन उत्पीड़न, मानसिक बलात्कार, असुरक्षा की बाढ़!

प्रोफेसरों की गंदी नीयत, प्रबंधन की गंदी साजिश, शिकायतें कुचलना — यह साम्राज्य है अपराध का! शर्मिंदा हो जाओ! भविष्य नष्ट हो रहा है, और तुम तमाशा देख रहे हो?

डर का ज़हर घोलो मत: पीड़िता को चुप कराने वाले हत्यारे हो! (बदनामी - करियर का खौफ अपराधियों का हथियार)

छात्रा काँपती है — करियर जलने का, बदनामी का, निकालने का डर! यह डर अपराधियों को राजा बनाता है, व्यवस्था को गद्दार! चिल्लाओ! शिकायत जोखिम? तो कानून कुत्ते की पूँछ!

हरियाणा के 100+ दबे मामले चीख रहे हैं— पीड़िता की चुप्पी तुम्हारी हत्या है!

कानून का ढोंग बंद करो: पोश - विशाखा कूड़े में फेंको अगर अमल न हो! (आईसीसी प्रबंधन की कठपुतली)

पोश अधिनियम (2013),
विशाखा (1997),
आईसीसी — सब ढोंग!

प्रबंधन के इशारे पर नाचती समितियाँ, 'छवि' के नाम पर पीड़िता को कुचलना! विद्रोह करो! न्याय दूसरा बलात्कार?

ऑडिट करो, या संस्थान बंद करो! 60% आईसीसी नकली (UGC 2024) — लज्जा आती है!

सत्ता के राक्षस: शिक्षकों की तानाशाही खत्म करो! (असंतुलन से जन्मे अपराध)

शिक्षक - प्रबंधन के पास ग्रेड - प्रमोशन की तलवार! वासना का दुरुपयोग, छात्रा असहाय! मारो लात! नैतिकता मरी हुई?

'मंदिर' कब्रिस्तान है — शिक्षक बलात्कारी, छात्र गुलाम? समाज को क्या संदेश, गंदे लोग?

संवेदनशीलता का लाश: शिक्षा डिग्री का कारखाना बन गई—नैतिकता जूतों तले! (लैंगिक सम्मान की हत्या)

पाठ्यक्रम - डिग्री, नैतिकता कूड़ेदान! राज्य हेल्पलाइन छापते रहो, निगरानी शून्य! फूटो! बाहरी महिला आईसीसी लाओ, गोपनीयता दो, या शिक्षा व्यवस्था जला दो!

मुख्य बिंदु: आंकड़ों की चीख — कार्रवाई करो, भागो मत!

हरियाणा का काला अध्याय: 2023-25 में 50+ प्रोफेसर दोषी, 70% मामले दबे (एनसीआरबी) — रक्त से सना!

कानूनी धोखा: पोश अनिवार्य 10 सदस्य आईसीसी (50% महिलाएँ), लेकिन 60% निष्क्रिय (UGC 2024) — कुचलो इन्हें!

समाज का पाप: "क्यों गई?" पूछ पीड़िता को मारो — अपराधी हँसेगा!

तुरंत हथियार: स्वतंत्र ऑडिट, सुरक्षा फंड, शिक्षक को जेल —नहीं तो विद्रोह!

अंतिम चेतावनी:

* चुप्पी तोड़ो, या भविष्य मर जाएगा

* सरकारें, संस्थान, समाज — कानून कानून चिल्लाओ मत, अमल करो!

* छात्रा चीखे बिना बोले, शिक्षक डरें, प्रबंधन काँपे!

* चुप्पी अपराधी का साथी — पीड़िता को ताकत दो!

* अब खड़े हो, लड़ो, मंदिर बचाओ — या कब्रिस्तान खुदाई शुरू!

नैतिक साहस जगा, कानून से ऊपर उठ — भविष्य जल रहा है!

ठेकेदार के माध्यम से रखे गए कर्मचारी नियमित कर्मियों के समान दर्जा नहीं मांग सकते: सुप्रीम कोर्ट

संजय कुमार बाठला

सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि ठेकेदार या तीसरे पक्ष की एजेंसियों के जरिए नियुक्त किए गए कर्मचारी नियमित सरकारी कर्मचारियों के समान सेवा लाभ और दर्जे का दावा नहीं कर सकते। अदालत ने कहा कि यदि ऐसे कर्मचारियों को नियमित कर्मियों के बराबर माना गया तो इससे सार्वजनिक नियुक्ति की पारदर्शी और निष्पक्ष प्रक्रिया की बुनियाद ही कमजोर हो जाएगी।

जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह और जस्टिस विपुल एम. पंचोली की खंडपीठ ने कहा कि राज्य संस्थाओं में नियमित नियुक्ति एक सार्वजनिक संपत्ति के समान है, जिसे ठेकेदारों के जरिए की गई संविदात्मक नियुक्तियों के बराबर नहीं ठहराया जा सकता।

कोर्ट ने टिप्पणी की,

"यदि ठेकेदार के माध्यम से काम पर लगाए गए व्यक्तियों को नियमित कर्मचारियों के समान दर्जा और लाभ दिए जाते हैं तो यह एक ऐसी प्रक्रिया को मान्यता देना होगा, जो पूरी तरह मनमानी है। ठेकेदार द्वारा किसे और कैसे नियुक्त किया जाएगा, इसके लिए कानून में कोई निर्धारित प्रक्रिया नहीं है, सिवाय न्यूनतम योग्यता के।"

मामले की पृष्ठभूमि

यह मामला आंध्र प्रदेश के कर्नूल जिले की नंद्याल नगर परिषद से जुड़ा है, जहां वर्ष 1994 से सफाईकर्मियों समेत कई श्रमिक अलग-अलग ठेकेदारों के माध्यम से नियुक्त किए गए। वर्षों के दौरान ठेकेदार बदलते रहे लेकिन वही कर्मचारी लगभग तीन दशकों तक नगर परिषद के लिए कार्य करते रहे।

इन कर्मचारियों ने यह कहते हुए आंध्र प्रदेश प्रशासनिक न्यायाधिकरण का रुख किया कि वे नियमित नगर कर्मचारियों जैसा ही काम कर रहे हैं, लेकिन उन्हें कम वेतन दिया जा रहा है। उन्होंने नियमितीकरण और समान वेतन की मांग की। हालांकि न्यायाधिकरण ने उनकी याचिका खारिज कर दी थी।

बाद में वर्ष 2018 में आंध्र प्रदेश हाइकोर्ट ने कर्मचारियों के पक्ष में फैसला सुनाते हुए नगर परिषद को निर्देश दिया कि उन्हें नियमित पदों के न्यूनतम वेतनमान और वार्षिक वेतनवृद्धि का लाभ दिया जाए।

सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई

\नगर परिषद ने हाइकोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। परिषद की ओर से दलील दी गई कि इन श्रमिकों और नगर परिषद के बीच कोई प्रत्यक्ष नियोक्ता-कर्मचारी संबंध नहीं है, क्योंकि वे ठेकेदारों के माध्यम से नियुक्त किए गए। इस आधार पर परिषद समान वेतन देने के लिए बाध्य नहीं है।

वहीं कर्मचारियों की ओर से दलील दी गई कि यदि संविदात्मक कर्मचारी नियमित कर्मचारियों के समान काम करते हैं तो उन्हें भी समान लाभ मिलना चाहिए।

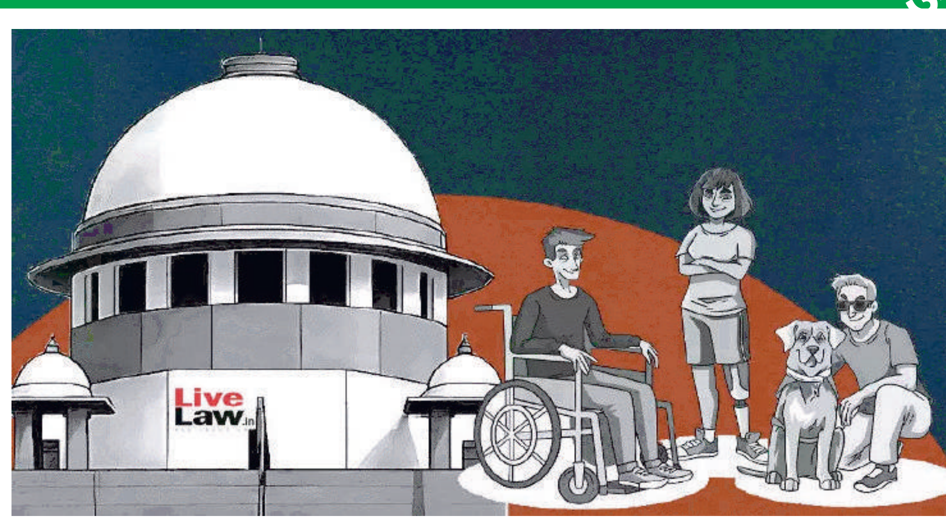

सुप्रीम कोर्ट ने नगर परिषद की दलीलों को स्वीकार करते हुए हाइकोर्ट का आदेश रद्द कर दिया। अदालत ने कहा कि ठेकेदार के माध्यम से नियुक्त कर्मचारियों और नियमित कर्मचारियों के बीच कानूनी तौर पर स्पष्ट और वैध अंतर है।

कोर्ट ने कहा,

"नियमित नियुक्तियों में पारदर्शी प्रक्रिया अपनाई जाती है, जिससे सभी पात्र नागरिकों को समान अवसर मिल सके और किसी प्रकार के पक्षपात से बचा जा सके। जबकि ठेकेदार के माध्यम से नियुक्ति पूरी तरह ठेकेदार के विवेक पर निर्भर होती है। यही दोनों के बीच मूलभूत अंतर है।"

अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि इस मामले में जगजीत सिंह के फैसले को लागू नहीं किया जा सकता, क्योंकि उस प्रकरण में कर्मचारी सीधे सरकार द्वारा संविदा पर नियुक्त किए गए, जबकि वर्तमान मामले में नियुक्ति एक मध्यस्थ ठेकेदार के जरिए हुई।

मानवीय आधार पर सीमित राहत

हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने अपील स्वीकार करते हुए भी एक मानवीय पहलू पर विचार किया। अदालत ने नगर परिषद को निर्देश दिया कि वह यह जांच करे कि जिन पदों पर ये कर्मचारी दशकों से बिना किसी बाधा के काम कर रहे हैं, क्या उन्हें नियमित किया जा सकता है, क्योंकि ये कार्य स्थायी प्रकृति के प्रतीत होते हैं।

साथ ही कोर्ट ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यह निर्देश केवल इस विशेष मामले तक सीमित है। इसे भविष्य में किसी अन्य मामले के लिए मिसाल के रूप में नहीं माना जाएगा।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html I
tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : SIM Lock + SIM Binding = धोखाधड़ी के खिलाफ डबल शील्ड

पिंकी कुंडू

क्या आपका सिम लॉक है नहीं तो अभी लॉक करें।

SIM Lock क्यों ज़रूरी है?

* शुरुआत में, SIM Lock टेलीकॉम कंपनियों ने ग्राहकों को आसानी से दूसरे नेटवर्क में पोर्ट होने से रोकने के लिए बनाया था।

* आज यह SIM Swapping के खिलाफ एक अहम सुरक्षा उपाय है — धोखेबाज़ों का आख़िरी हथकंडा, जब SIM Binding ने क्लोनिंग को बेअसर कर दिया है।

डुअल प्रोटेक्शन समझें

* SIM Binding आपकी डिजिटल पहचान (ऐप्स, बैंकिंग, OTPs) को सुरक्षित करता है।

* SIM Lock आपके डिवाइस-नेटवर्क संबंध को सुरक्षित करता है (कौन सा SIM आपके फोन में काम करेगा, इसे नियंत्रित करता है)।

* दोनों मिलकर एक मल्टी-लेयर डिफेंस बनाते हैं:

* SIM Swap धोखाधड़ी

* डिवाइस चोरी

* आपके खातों तक अनधिकृत पहुँच

SIM Binding के बाद भी SIM Lock क्यों ज़रूरी

* लेयर्ड प्रोटेक्शन: Binding सेवाओं को सुरक्षित करता है, Lock डिवाइस को।

* धोखाधड़ी रोकथाम: अपराधियों को नया SIM डालकर Binding को बायपास करने से रोकता है।

* ऑपरेशनल कंट्रोल: टेलीकॉम कंपनियाँ अनुपालन लागू करती हैं; उपयोगकर्ता अपनी पहचान सुरक्षित रखते हैं।

*** पूरक भूमिकाएँ:**

* SIM Lock = डिवाइस -- नेटवर्क

* SIM Binding = SIM -- सेवा

छिपा ख़तरा: SIM Swapping

धोखेबाज़ अनलॉक्ड SIM का इस्तेमाल करके:

* आपका नंबर हाइजैक करते हैं

* OTP इंटरसेप्ट कर बैंक खाते खाली करते हैं

* WhatsApp, Telegram और सोशल मीडिया अपने डिवाइस पर इंस्टॉल कर लेते हैं

* आपकी प्राइवेसी और पहचान चुरा लेते हैं

एक सेटिंग। एक मिनट। सुरक्षा की बड़ी छलांग। SIM Lock करना एक मिनट से भी कम समय लेता है — लेकिन यह आपको घंटों की घबराहट, आर्थिक नुकसान और पहचान चोरी से बचा सकता है।

SIM Lock कैसे करें

* Android पर:

1. Settings Security / Biometrics & Security पर जाएँ
2. SIM card lock / Other security settings चुनें
3. Lock SIM card ON करें
4. डिफ़ॉल्ट SIM PIN डालें (अक्सर 0000 या 1234, प्रदाता से जाँचें)
5. **नया सुरक्षित PIN सेट करें**

iPhone पर:

1. Settings Cellular SIM PIN पर जाएँ
2. SIM PIN ON करें
3. डिफ़ॉल्ट PIN डालें
4. इसे मज़बूत, निजी PIN में बदलें

*** सावधानी:**

* 3 गलत PIN प्रयास = SIM ब्लॉक।

* अनलॉक करने के लिए PUK कोड चाहिए (SIM पैकेजिंग, ऑपरेटर ऐप/वेबसाइट, या कस्टमर केयर से)।

* 10 गलत PUK प्रयास = स्थायी SIM ब्लॉक। ध्यान से संभालें।

* SIM Lock के फायदे

* SIM Swap हमलों को रोकता है

* OTPs, UPI, बैंकिंग, ईमेल, सोशल मीडिया को सुरक्षित करता है

* SIM को दूसरे डिवाइस में इस्तेमाल होने से रोकता है अधिकारियों, पत्रकारों, पेशेवरों और नागरिकों के लिए स्मार्ट साइबर हाइजीन

* SIM PIN भूल गए?

* अपना PUK कोड प्राप्त करें:

* SIM पैकेजिंग पर

* ऑपरेटर ऐप/वेबसाइट से कस्टमर केयर को कॉल करके (ID सत्यापन के साथ)

* अंतिम संदेश आपका SIM आपकी डिजिटल पहचान है। इसे लॉक करें, इससे पहले कि कोई और कर दे। सतर्क रहें। सुरक्षित रहें। सशक्त बनें।

इसे अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ साझा करें — और सुनिश्चित करें कि हर SIM आज ही लॉक हो।

यदि गुस्सा आपकी दैनिक जिंदगी और रिश्तों को प्रभावित कर रहा है, तो निम्नलिखित उपाय करे या फिर किसी पेशेवर काउंसलर या थेरेपिस्ट से बात करें

पूजा
(मानसिक स्वास्थ्य विद्यालय परामर्शदाता)

1. बात-बात पर गुस्सा आना,

2. गुस्से में आंखें लाल हो जाना और फिर

3. अपना ही काम बिगड़ जाना,

क्रोध की यही नियति होती है। तभी कहते है गुस्सा नहीं करना।

क्या आपको भी छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आ जाता है ?

* क्रोध आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन माना जाता है।

* बात-बात पर गुस्सा करने वालों के अक्सर बनते-बनते काम बिगड़ जाते हैं।

* घर-परिवार से लेकर कार्यक्षेत्र में उनके संबंधों में तनाव रहता है।

* वहीं क्रोध करने वालों से कई लोग विभिन्न मौकों पर दूरी बनाकर रखते हैं,

* इससे क्रोधी व्यक्ति अलग-थलग महसूस करता है।

वैसे तो आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में काम का दबाव इतना अधिक है कि व्यक्ति को कुछ अवसरों पर क्रोध आ ही जाता है।

Mental health Tips: मन में दबा गुस्सा धीरे धीरे जमा होने लगता है और इसका असर मेंटल और फिजिकल हेल्थ पर होने लगता है. गुस्सा को दबा कर रखने की जगह हमें इसे सही तरीके से निकालना आना चाहिए1

1. गुस्से के मूल कारण को समझें:

यह सोचें कि आपको गुस्सा क्यों आ रहा है?

*** क्या यह थकान, भूख या किसी पुरानी बात की वजह से है?**

* समस्या के बजाय उसके समाधान पर ध्यान दें।

2. गुस्से के अन्य कारण :

* अन्याय या बुरा व्यवहारः जब कोई व्यक्ति महसूस करता है कि उसके साथ गलत हुआ है या उसे बुरा बर्ताव किया गया है।

* अपेक्षाएं पूरी न होनाः जब आप जो चाहते हैं, वैसा नहीं होता या कोई आपकी उम्मीदों के मुताबिक काम नहीं करता।

* डर और असहाय महसूस करनाः गुस्सा अक्सर डर, शर्मिंदगी या शक्तिहीन महसूस करने की प्रतिक्रिया हो सकता है।

* थकान और भूखः शारीरिक थकावट या भूख भी गुस्से का कारण बन सकती है।

3. गुस्से के लक्षण :

* हृदय गति और रक्तचाप का बढ़ना।

* साँसें तेज़ चलना।

* सोचने-समझने की क्षमता कम होना।

* शरीर में तनाव और बेचैनी महसूस होना।

4. गुस्से को नियंत्रित करने के उपाय :

* साँस लेने की तकनीकः गहरी और धीमी साँसें लें, इससे दिमाग शांत होता है।

* ध्यान (Meditation): नियमित ध्यान से गुस्सा कम होता है और शांति मिलती है।

* व्यायाम (Exercise): शारीरिक गतिविधि तनाव और गुस्से को कम करने में मदद करती है।

* बातचीत (Communication): अपनी भावनाओं को सही तरीके से व्यक्त करना सीखें, चिल्लाने के बजाय।

* शांत रहेंः जब गुस्सा आए, तो तुरंत प्रतिक्रिया देने से बचें; कुछ देर रुकें और स्थिति को समझें।

* स्वस्थ जीवनशैलीः पर्याप्त नींद लें और मसालेदार, तैलीय भोजन से बचें।

5. गुस्से के नुकसान :

* शारीरिक समस्याएंः हार्ट अटैक, स्ट्रोक और उच्च रक्तचाप का खतरा बढ़ सकता है।

* मानसिक समस्याएंः चिंता और डिप्रेशन को बढ़ा सकता है।

* सामाजिक समस्याएंः रिश्तों में तनाव और लड़ाई-झगड़े का कारण बन सकता है।

*** महत्वपूर्ण लिंक:**

1. तनाव और गुस्से के प्रबंधन के लिए आप (info@counsellingwali.com) की वेबसाइट पर प्रोफेशनल काउंसलर की सलाह ले सकते हैं।

2. मानसिक स्वास्थ्य सहायता के लिए हेल्पलाइन ☏ (9716739398) पर संपर्क किया जा सकता है।

यदि गुस्सा आपकी दैनिक जिंदगी और रिश्तों को प्रभावित कर रहा है, तो किसी पेशेवर काउंसलर या थेरेपिस्ट से बात करना सबसे अच्छा विकल्प है।

बाजरा खाइए, हड्डियों के रोग नहीं होंगे।

पिंकी कुंडू

बाजरे की रोटी का स्वाद जितना अच्छा है, उससे अधिक उसमें गुण भी हैं।

- बाजरे की रोटी खाने वाले को हड्डियों में कैल्शियम की कमी से पैदा होने वाला रोग आस्टियोपोरोसिस और खून की कमी यानी एनीमिया नहीं होता।

* -बाजरा लीवर से संबंधित रोगों को भी कम करता है।

- गेहूं और चावल के मुकाबले बाजरे में ऊर्जा कई गुना है।

- बाजरे में भरपूर कैल्शियम होता है जो हड्डियों के लिए रामबाण औषधि है। उधर आयरन भी बाजरे में इतना अधिक होता है कि खून की कमी से होने वाले रोग नहीं हो सकते।

- खासतौर पर गर्भवती महिलाओं ने कैल्शियम की गोलियां खाने के स्थान पर रोज बाजरे की दो रोटी खाना चाहिए।

- सिक्किम में गर्भवती महिलाओं को कैल्शियम और आयरन की जगह बाजरे की रोटी और खिचड़ी दी जाती हैं, इससे उनके बच्चों को जन्म से लेकर पांच साल की उम्र तक कैल्शियम और आयरन की कमी से होने वाले रोग नहीं होते।

* -इतना ही नहीं बाजरे का सेवन करने वाली महिलाओं में प्रसव में असामान्य पीड़ा के मामले भी न के बराबर पाए गए।

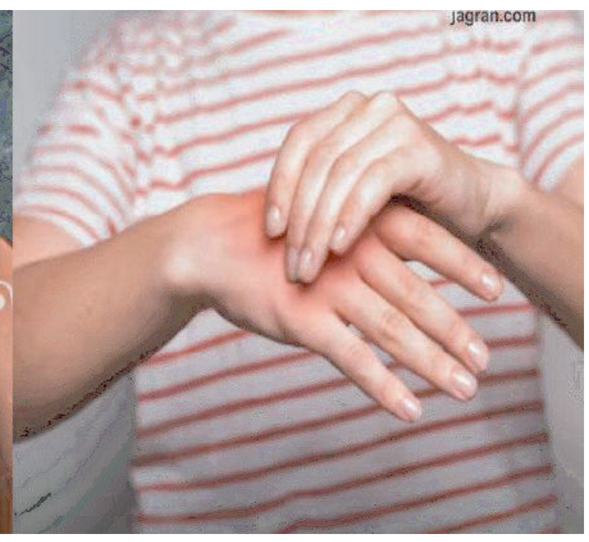

- डाक्टर तो बाजरे के गुणों से इतने प्रभावित है कि इसे अनाजों में वज्र की उपाधि देने में जुट गए हैं।

- बाजरे का किसी भी रूप में सेवन लाभकारी है।

* लीवर की सुरक्षा के लिए भी बाजरा खाना लाभकारी है।

* उच्च रक्तचाप, हृदय की कमजोरी, अस्थमा से ग्रस्त लोगों तथा दूध पिलाने वाली माताओं में दूध की कमी के लिये यह टॉनिक का कार्य करता है।

- यदि बाजरे का नियमित रूप से सेवन किया जाय तो यह कुपोषण, क्षरण सम्बन्धी रोग और असमय वृद्धहोने की प्रक्रियाओं को दूर करता है।

- रागी की खपत से शरीर प्राकृतिक रूप से शान्त होता है। यह एंग्जायटी, डिप्रेशन और नींद न आने की बीमारियों में फायदेमन्द होता है। यह माइग्रेन के लिये भी लाभदायक है।

- इसमें लेसिथिन और मिथियोनिन नामक अमीनो अम्ल होते हैं जो अतिरिक्त वसा को हटा कर कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करते हैं।

- बाजरे में उपस्थित रसायन पाचन की प्रक्रिया को धीमा करते हैं।

कमज़ोरी, जोड़ों के दर्द व पैरों की ताक़त बढ़ाने वाला आहार

1. मांसपेशियों की ताक़त बढ़ाने के लिए (Protein + Minerals)

* रोज़ शामिल करें:
* दालें – मूंग, मसूर, अरहर
* चना / छोले / राजमा
* अंडा (यदि लेते हों) – 1 प्रतिदिन
* पनीर / दही
* मुट्ठी भर बादाम + 1 अखरोट
* फायदाः मांसपेशियाँ मज़बूत होती हैं, चलने में स्थिरता आती है।

2. हड्डियों व जोड़ों के लिए

* (Calcium + Vitamin D + K)
* दूध / छाछ / दही
* तिल (Sesame seeds) – 1 चम्मच भुने हुए
* हरी पत्तेदार सबज़ियाँ – पालक, मेथी, सहजन पत्ते
* सूरज की रोशनी – रोज़ 15–20 मिनट
* फायदाः घुटनों, कमर और एड़ियों में मजबूती।

3. जोड़ों के दर्द व सूजन कम करने के लिए (Anti-inflammatory foods)

* हल्दी – गुनगुने दूध में 1/2 चम्मच
* अदरक – सब्ज़ी या चाय में
* लहसुन – 1–2 कली
* अलसी (Flaxseed) – 1 चम्मच पिसी हुई
* फायदाः सूजन, जकड़न और सुबह की अकड़न में राहत।

4. नसों और संतुलन के लिए (B-Complex +Magnesium)

* केला
* ओट्स / दलिया
* कद्दू के बीज
* मूंगफली
* फायदाः पैरों में झनझनाहट, कमजोरी व लड़खड़ाहट कम होती है।

5. ऊर्जा व रक्त संचार के लिए

* चुकंदर
* अनार
* आंवला
* खजूर (1–2)
* फायदाः थकान कम, पैरों में गर्माहट व ताक़त।

एक दिन का सरल डाइट चार्ट (उदाहरण)

* सुबह खाली पेट

1. गुनगुना पानी + 1 चम्मच अलसी पाउडर

2. नाश्ता

* सब्ज़ी वाला दलिया / ओट्स + 1 फल

3. दोपहर का भोजन

* 2 रोटी / ब्राउन राइस
* दाल + हरी सब्ज़ी + दही
* शाम
* मुट्ठी भर भुने चने / मूंगफली
* हल्दी वाली चाय / अदरक चाय
* रात का भोजन
* हल्की सब्ज़ी + रोटी
* सोने से पहले हल्दी दूध

इन चीज़ों से बचें
ज़्यादा चीनी, मैदा, तला-भुना
बहुत ज़्यादा नमक
ठंडा फ्रिज का पानी
देर रात भारी भोजन

साथ में करें (बहुत ज़रूरी)
रोज़ 10–15 मिनट हल्की वॉक
कुर्सी पर बैठकर पैरों की एक्सरसाइज़
पर्याप्त नींद

कभी-कभी दिल से हंसने से आपके शरीर को कमाल के फायदे मिलेंगे

पिंकी कुंडू

जल्दबाजी सिर्फ चेहरे पर मुस्कान नहीं है यह मन, दिमाग और शरीर के लिए हैंः-

* एक नेचुरल दवा !

आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में, हम खुशी-खुशी आगे बढ़ रहे हैं लेकिन याद रखें

हसनम = हेल्थ + खुशी + पॉजिटिविटी

हंसने के फिजिकल और मेंटल फायदे

1. स्ट्रेस कम करना हंसने से एंडोर्फिन और डोपामाइन हॉर्मोन निकलते हैं - कम होते हैं स्ट्रेस।

2. ब्लड प्रेशर कंट्रोल से बाहर हो जाता है रेगुलर हंसने से दिल हेल्दी रहता है।

3. इम्यूनिटी बढ़ती है शरीर में T-सेल्स एक्टिवेट होते हैं।

4. फेफड़ों की एक्सरसाइज सांस लेने की पावर बढ़ती है।

5. वेदों पर आधारित नेचुरल इलाज हंसना एक नेचुरल पेनकिलर है !

6. डाइजेशन बेहतर करता है पोटाश नर्व्स को एक्टिवेट करता है।

7. पॉजिटिव विचार बढ़ाता है निराशा से मुक्ति।

8. चेहरे पर चमक लाता है स्किन यंग और खुश दिखती है।

9. पीरियड्स में ऐंठन शांति और गहरी नींद आती है।

10. रिश्ते मजबूत होते हैं हर कोई खुश इंसान को पसंद करता है।

हंसने के कुछ अलग फायदे

1. कम्युनिकेशन स्किल्स बेहतर होती हैं

2. क्रिएटिविटी बढ़ती है

3. ह्यूमरस योग मन और शरीर को आराम देता है।

साइंटिफिक रूप से आधारित

1. लिम्बिक सिस्टम को एक्टिवेट करता है

2. कोर्टिसोल (स्ट्रेस हॉर्मोन) को कम करता है

रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हंसी कैसे बढ़ाएं? सुबह खुशी के साथ दिन की शुरुआत करें

1. मज़ेदार फ़िल्में/वीडियो देखें

2. दोस्तों और परिवार के साथ चैट करें

3. कॉमेडी योगा ट्राई करें

4. हर दिन एक मज़ेदार पल

प्रेरणादायक विचार "हंसने से न सिर्फ़ खुशी मिलती है, बल्कि सेहत भी बेहतर होती है।"

हंसना बिना किसी इन्वेस्टमेंट के सबसे बड़ी इनकम है !

* इसीलिए
* मुस्कुराते रहो
* खुश रहो
* स्ट्रेस फ्री रहो

स्वास्थ्य ही सफलता की कुंजी है

परिवहन विशेष और टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत का मधुमेह राहत भारत मिशन - आज ही जुड़ें !

चांगेरी घास Oxalis corniculata गुण, लाभ, उपयोग और सावधानियाँ

पिंकी कुंडू

चांगेरी घास एक सामान्य - सी दिखने वाली लेकिन अत्यंत उपयोगी आयुर्वेदिक औषधीय वनस्पति है। यह अक्सर बगीचों, लॉन, खेतों और खाली स्थानों पर स्वतः उगती हुई दिखाई देती है, जिस कारण लोग इसे साधारण घास समझकर अनदेखा कर देते हैं।

आयुर्वेद में इसे एक महत्वपूर्ण औषधि के रूप में वर्णित किया गया है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे प्राचीन ग्रंथों में चांगेरी के गुण, उपयोग और लाभ विस्तार से बताए गए हैं।

* चांगेरी घास की पहचान
* इसके पत्ते तीन पंखुड़ियों वाले होते हैं
* पत्तियों का आकार दिल (Heart shape) जैसा होता है
* स्वाद हल्का खट्टा होता है
* पौधे पर पीले रंग के छोटे-छोटे फूल आते हैं
* इसका वैज्ञानिक नाम Oxalis corniculata है
* अंग्रेज़ी में इसे Indian Sorrel कहा जाता है
* सही पहचान हैं ज़रूरीः- चांगेरी घास को अन्य समान दिखने वाली जंगली घासों से भ्रमित न करें। तीन दिलाकार पत्ते, पीले फूल और खट्टा स्वाद इसकी मुख्य पहचान है।
* चांगेरी घास का प्राकृतिक विस्तारः- यह पौधा समशीतोष्ण और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से पाया जाता है।
* भारत, चीन, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, अफगानिस्तान, ताइवान, जापान
* एशिया के साथ-साथ यूरोप और उत्तरी अमेरिका में भी पाया जाता है
* बगीचों, घास के मैदानों, कृषि क्षेत्रों और पौधों की नर्सरी में सहज रूप से उगता है
* आयुर्वेदिक गुणः- आयुर्वेद में किसी भी औषधीय पौधे के प्रभाव को उसके रस, गुण, वीर्य और विपाक के आधार पर समझा जाता है। चांगेरी घास के आयुर्वेदिक गुण इस प्रकार हैं:
* रस (स्वाद): अम्ल (खट्टा) और कषाय — यही कारण है कि यह पाचन को सक्रिय करती है और भूख बढ़ाने में सहायक होती है।
* गुण (स्वभाव): लघु (हल्का) और रुक्ष — यह शरीर में भारीपन और अतिरिक्त चिकनाहट को कम करती है।
* वीर्य (प्रभाव): शीतल — पेट की जलन, सूजन और पित्तजन्य समस्याओं में लाभकारी।
* विपाक (पाचन के बाद प्रभाव): कटु — शरीर के मेटाबॉलिज़्म को संतुलित रखने में मदद करता है।

*** दोषों पर प्रभावः**

* यह पित्त और कफ दोष को संतुलित करने में सहायक है।
* अधिक मात्रा में या लंबे समय तक सेवन करने पर वात दोष बढ़ सकता है,
* इसलिए संतुलित मात्रा में ही उपयोग करना चाहिए।

पोषक तत्वः- चांगेरी घास के पत्तों में पाए जाते हैं:

* विटामिन C,
* कैल्शियम,
* पोटैशियम,
* आयरन,
* प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट

ये तत्व शरीर को डिटॉक्स करने, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और कोशिकाओं को क्षति से बचाने में सहायक होते हैं।

* चांगेरी घास के औषधीय उपयोगी भाग
* पत्तियाँः रस, चटनी, लेप
* पूरा पौधाः क्वाथ और चूर्ण
* फूलः हल्के सूजन व त्वचा प्रयोग में
* तनाः पाचन औषधियों में

*** चांगेरी घास के प्रमुख फायदे**

* पाचन तंत्र के लिए
* गैस, एसिडिटी और पेट दर्द से राहत
* भूख बढ़ाने में सहायक
* दस्त और पेट की जलन में उपयोगी
* लिवर स्वास्थ्य
* लिवर को स्वस्थ रखने में सहायक
* लिवर डैमेज से बचाने में मददगार
* रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity)
* शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करती है
* संक्रमण से लड़ने में सहायक
* त्वचा रोग
* फोड़े-फुंसी, घाव और सूजन में लाभकारी
* रक्त को शुद्ध करने में सहायक
* महिलाओं के स्वास्थ्य में
* ल्यूकोरिया (सफेद पानी) में लाभ
* कमजोरी और थकान में सहायक
* मुंह और दांत
* मुंह की बदबू दूर करती है
* मसूड़ों की सूजन और दांतों की कमजोरी में सहायक
* बवासीर (Piles) दर्द, जलन और सूजन कम करने में सहायक
* शरीर को डिटॉक्स करे विषैले तत्व (toxins) बाहर निकालने में मदद

*** अन्य लाभ**

* मधुमेह में सहायक
* मूत्र संक्रमण में लाभ
* सूजन और नशे की लत से उबरने में सहायक मानी जाती है

*** बाहरी उपयोग**

* पत्तों का लेप घाव, सूजन और जलन में
* कीड़े के काटने पर खुजली और दर्द में राहत
* त्वचा एलर्जी और संक्रमण में सहायक

*** उपयोग के तरीके**

* चटनी चांगेरी की पत्तियाँ + पुदीना + अदरक + लहसुन पीसकर चटनी बनाएँ
* रस पत्तों का रस मिश्री के साथ सेवन करें

*** सेवन की सही मात्रा**

* पत्तों का रसः 1–2 चम्मच, दिन में 1 बार
* चटनीः सप्ताह में 2–3 बार पर्याप्त
* अधिक मात्रा में नियमित सेवन न करें

*** सावधानियाँ**

* किडनी स्टोन वाले व्यक्ति सावधानी रखें
* गर्भवती महिलाएँ सेवन से पहले डॉक्टर से सलाह लें
* अत्यधिक वात या एसिडिटी वाले लोग सीमित मात्रा लें
* छोटे बच्चों को नियमित सेवन न कराएँ
* इसमें ऑक्सैलिक एसिड पाया जाता है, इसलिए संतुलन आवश्यक है।

महत्वपूर्ण सूचनाः किसी भी गंभीर स्वास्थ्य समस्या में चांगेरी घास का उपयोग करने से पहले आयुर्वेदिक चिकित्सक या डॉक्टर से सलाह अवश्य लें।

पिंकी कुंडू

एक दिन हनुमान जी जब सीता जी की शरण में आए, नैनों में जल भरा हुआ है बैठ गए शीश झुकाए

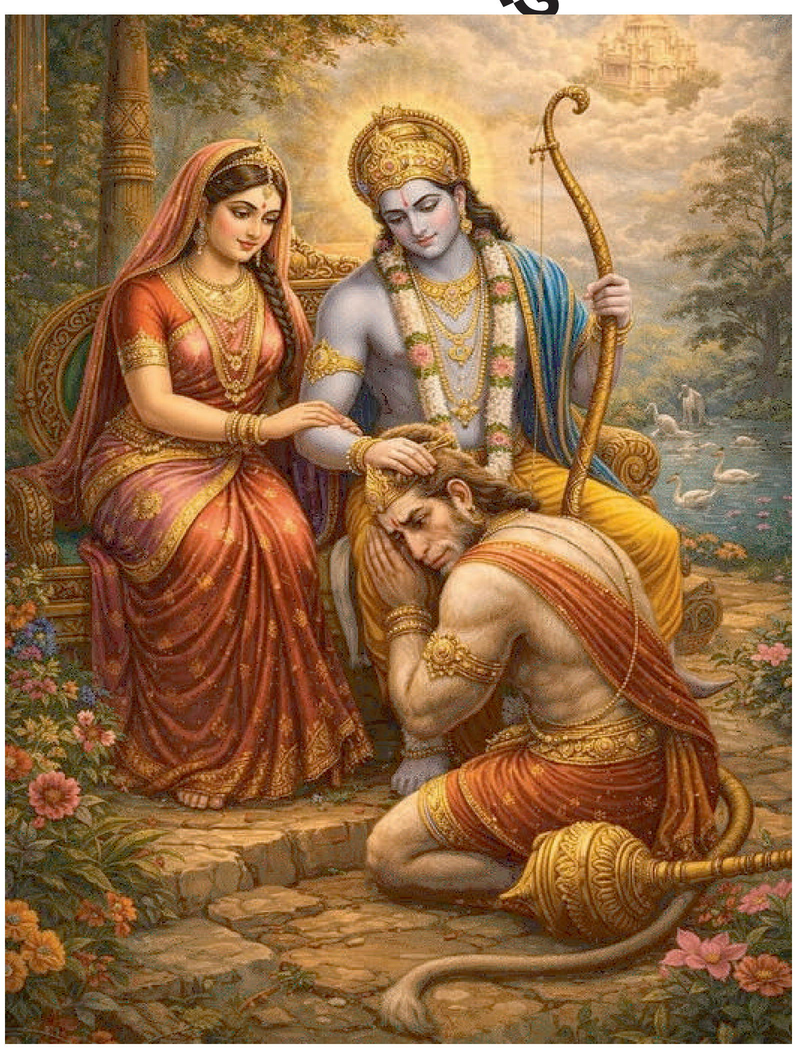

सीता जी ने पूछा उनसे कहो लाडले बात क्या है, किस कारण ये छाई उदासी, नैनों में क्यों नीर भरा है ?

हनुमान जी बोले मैया आपने कुछ वरदान दिए हैं, अजर अमर की पदवी दी है, और बहुत सम्मान दिए हैं, अब मैं उन्हें लौटाने आया, मुझे अमर पद नहीं चाहिए, दूर रहूं मैं श्री चरणों से, ऐसा जीवन नहीं चाहिए।

सीता जी मुस्कुराकर बोली बेटा ये क्या बोल रहे हो, अमृत को तो देव भी तरसे, तुम काहे को डोल रहे हो?

इतने में श्रीराम प्रभु आ गए और बोले, क्या चर्चा चल रही है मां बेटे में............??

तब सीताजी बोली सुनो नाथ जी, ना जाने क्या हुआ हनुमान को, पदवी अजर-अमर लौटाने आया है ये मुझको।

राम जी बोले क्यों बजरंगी ये क्या लीला नई रचाई, कौन भला छोड़ेगा , अमृत की ये अमर कमाई!!

हनुमान जी रोकर बोले, आप साकेत पधार रहे हो, मुझे छोड़कर इस धरती से, आप वैकुंठ सिधार रहे हो, आप बिना क्या मेरा जीवन अमृत का विष पीना होगा, तड़प-तड़प कर विरह अग्नि में जीना भी क्या जीना होगा!!

हनुमान जी बोले प्रभु अब आप ही बताओ, आप के बिना मैं यहां कैसे रहूंगा??

तब इस पर प्रभु श्रीराम बोले....

हनुमान सीता का यह वरदान सिर्फ आपके लिए ही नहीं है, बल्कि यह तो संसार भर के कल्याण के लिए है, तुम यहां रहोगे, और संसार का कल्याण करोगे।

मांगो हनुमान वरदान मांगो:-

इस पर श्री हनुमान जी बोले।

जहां जहां पर आपकी कथा हो, आपका नाम हो, वहां-वहां पर मैं उपस्थित होकर हमेशा आनंद लिया करूं

सीताजी बोलीं दे दो प्रभु दे दो,

तब भगवान राम ने हंसकर कहा, तुम नहीं जानती सीता ये क्या मांग रहा है, ये अनगिनत शरीर मांग रहा है, जितनी जगह मेरा पाठ होगा उतनें शरीर मांग रहा है,

तब सीता जी बोलीं, तो दे दो फिर क्या हुआ, आपका लाडला है।

तब इस पर प्रभु श्रीराम बोले ,तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी

वहां बिराजोगें बजरंगी, जहां हमारी चर्चा होगी, कथा जहां पर राम की होगी, वहां ये राम दुलारा होगा, जहां हमारा चिंतन होगा, वहां पे जिक्र तुम्हारा होगा।

कलयुग में मुझसे भी ज्यादा पूजा हो हनुमान तुम्हारी, जो कोई तुम्हारी शरण में आए, भक्ति उसको मिले हमारी,, मेरे हर मंदिर की शोभा बनकर आप बिराजोगे, मेरे नाम का सुमिरन करके सुध बुध खोकर नाचोगे।।

नाच उठे ये सुन बजरंगी, चरणन शीश नवाया,

दुख हर्ता , सुख-कर्ता प्रभु का, प्यारा नाम ये गाया..

नवार्ण मंत्र में छुपी है, सरस्वती, महालक्ष्मी और महाकाली की शक्ति, देवी के सभी नौ रूपों की आराधना और सभी ग्रहों को अनुकूल बनाने की शक्ति

पिंकी कुंडू

इतिहास एवं प्राचीन सन्दर्भ : नवार्ण मंत्र का विवेचन दुर्गा सप्तशती के सिद्ध कुंजीका स्तोत्र में मिलता है, जहाँ भगवान शिव ने इसके अर्थ और शक्ति का वर्णन किया है।

यह मंत्र मूलतः आगम (तंत्र) ग्रंथों से आया है, जिसे बाद में वैदिक और पौराणिक परंपराओं में समाहित किया गया। शिव पुराण में इसे 'मूल मंत्र' या 'बीज मंत्र' कहा गया है, जो देवी उपासना की जड़ है।

नर्वाण मंत्र से शक्ति की साधना शीघ्र ही सफल होती है, देवी दुर्गा की कृपा से सभी दुःख दूर होते हैं और सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। "ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' नौ अक्षरों वाले इस परम गोपनीय और अत्यंत लाभकारी मंत्र के जाप से माता का आशीर्वाद मिलता है, इस मंत्र साधना से साधक अपनी कुण्डलिनी को भी जाग्रत कर सकता है।

ऐं : सरस्वती का बीज मन्त्र है ।

ह्रीं : महालक्ष्मी का बीज मन्त्र है ।

क्लीं : महाकाली का बीज मन्त्र है ।

नवार्ण मंत्र के प्रथम बीज मंत्र "ऐं" से माता दुर्गा के प्रथम रूप, माता शैलपुत्री की उपासना की जाती है. इस बीज मंत्र में "सूर्य ग्रह" को अनुकूल बनाने की शक्ति निहित है !

नवार्ण मंत्र के द्वितीय बीज मंत्र "ह्रीं" से माता दुर्गा की द्वितीय शक्ति माता ब्रह्मचारिणी की आराधना की जाती है, और इस बीज मंत्र में "चन्द्र ग्रह" को अनुकूल करने की शक्ति है !

नवार्ण मंत्र के तृतीय बीज मंत्र "क्लीं" से माता दुर्गा की तृतीय शक्ति माता चंद्रघंटा की उपासना की जाती है, और इसमें "मंगल ग्रह" को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है !

नवार्ण मंत्र के चतुर्थ बीज मंत्र "चा" से माता दुर्गा की चतुर्थ शक्ति माता कुष्मांडा की उपासना की जाती है, इसमें "बुध ग्रह" को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है !

नवार्ण मंत्रके पंचम बीज मंत्र "मुं" से माता दुर्गा की पंचम शक्ति माँ स्कंदमाता की उपासना की जाती है, इस बीज मंत्र में "बृहस्पति ग्रह" को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है !

नवार्ण मंत्र के षष्ठ बीज मंत्र "डा" से माता दुर्गा की षष्ठ शक्ति माता कात्यायनी की उपासना की जाती है, इस बीज मंत्र से "शुक्र ग्रह" को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है !

नवार्ण मंत्र के सप्तम बीज मंत्र "यै" से माता दुर्गा की सप्तम शक्ति माता कालरात्रि की उपासना की जाती है, इस बीज मंत्र से "शनि ग्रह" को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है !

नवार्ण मंत्र के अष्टम बीज मंत्र "वि" से माता दुर्गा की अष्टम शक्ति माता महागौरी की उपासना की जाती है, इस बीज मंत्र में "राहु ग्रह" को नियंत्रित करने की शक्ति है !

नवार्ण मंत्र के नवम बीज मंत्र "चै" से माता दुर्गा की नवम शक्ति माता सिद्धीदात्री की उपासना की जाती है, इस बीज मंत्र में "केतु ग्रह" को अनुकूल करने की शक्ति समायी हुई है !

नवार्ण मंत्र की सिद्धि 9 दिनो मे 1,25,000 मंत्र जप से होती है, परंतु ऐसा न कर पाये, तो नित्य 1, 3, 5, 7, 11 या 21 माला मंत्र जप करने से भी उत्तम फल प्राप्त होगा।

इससे सम्पूर्ण इच्छायें पूर्ण होती है, समस्त दुख समाप्त होते है और धन का आगमन भी सहज रूप से होता है।

(गुप्त नवरात्र १९ से २७ जनवरी २०२६) "क्या हम धीरे धीरे दस महाविद्याओं को भूल रहे हैं?"

पिंकी कुंडू

आज दुःख है...

बीमारी है...

हृदय रोग बढ़ रहे हैं...

कैंसर, डिप्रेशन, एंग्ज़ायटी आम हो गई है...

प्रकृति असंतुलित है...

और हम पूछते हैं — यह सब क्यों हो रहा है?

काफी हद तक हम दस महाविद्याओं को भूलते जा रहे हैं — और यह केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, मानसिक और आध्यात्मिक विस्मृति का संकेत है।

आज की स्थिति को अगर गहराई से देखें तो कारण स्पष्ट दिखते हैं:

1. बाहरी चमत्कार, भीतरी साधना का अभाव दस महाविद्याएँ तत्काल वरदान देने वाली देवियाँ नहीं, बल्कि अहंकार, भय, मोह, वासना, अज्ञान को काटने वाली शक्तियाँ हैं।

* आज का मन शॉर्टकट चाहता है —

* रील, वायरल बाबा, त्वरित उपाय —

* जबकि महाविद्याएँ तप, संयम और आत्मचिंतन मांगती हैं।

2. भय के कारण दूरी काली, भैरवी, धूमावती, छिन्नमस्ता — इनके रूप सत्य के तीखे रूप हैं।

* आज का समाज सौम्य दिखावा चाहता है,

* सत्य का प्रचंड दर्शन नहीं।

* इसलिए लोग इन शक्तियों से डरकर दूर हो गए।

3. आधुनिक जीवन और मानसिक रोग दस महाविद्याएँ सीधे-सीधे जुड़ी हैं—

* मां काली — मृत्यु का भय हरने वाली

* मां तारा — मानसिक शांति और वाणी की अधिष्ठात्री

* मां भैरवी — रोग, पीड़ा और तप की शक्ति

* मां छिन्नमस्ता — अहंकार का बलिदान

* मां धूमावती — अकेलेपन और अवसाद का सत्य

* मां बगलामुखी — नकारात्मक शक्तियों का स्तंभन

* मां मातंगी — चेतना और वाणी की शुद्धि

* मां कमला — धन और धर्म का संतुलन

* मां षोडशी — प्रेम, आकर्षण और जीवन ऊर्जा

* मां भुवनेश्वरी — प्रकृति और पंचतत्त्व की रक्षक

आज जब हृदय रोग, कैंसर, डिप्रेशन, एंग्ज़ायटी बढ़ रहे हैं — क्योंकि हमने प्रकृति, चेतना और साधना तीनों से दूरी बना ली।

4. सोशल मीडिया के नए "भगवान" आज "जो ट्रेंड करे वही सत्य" बन गया है।

* ज्ञान की जगह व्यूज़,

* साधना की जगह सेल्फी, और

* मंत्र की जगह म्यूज़िक।

दस महाविद्याएँ शोर नहीं करतीं — वे अंदर परिवर्तन करती हैं, इसलिए एल्गोरिदम में नहीं आतीं।

5. जब प्रलय आती है, तब महाविद्या स्मरण होती हैं इतिहास गवाह है — जब समाज टूटता है,

* महामारी आती है,

* युद्ध, रोग, पर्यावरण असंतुलन बढ़ता है — तब काली, तारा, भैरवी का स्मरण होता है।

* आज संकेत वही हैं ... पर हम अब भी भूल में हैं।

माता पिता, साधु संत और बड़े बुजुर्गों के चरणों में शत शत नमन, यही है जीवन में बड़ा बनने का सुगम हल

पिंकी कुंडू

आशीर्वाद में बहुत बड़ा बल है, सच्चे हृदय से निकला आशीर्वाद हमारे दुर्भाग्य को भी सौभाग्य में बदल सकता है !

एक महिला हुई है सावित्री, राम नाम के रंग में रंगी परम अनुरक्ता ! घर के समीप ही एक आश्रम है जहा एक परम संत निवास किया करते है नित्य-प्रति वहा जा कर के तो झाड़ू पोंच्चा लगाया करती है ! संत महात्मा के चरण छू कर के उनका सम्मान किया करती है !

आज भाग्य का कुठाराघात हुआ है; पति की मृत्यु हो गयी है ! शव-यात्रा शमशान की ओर प्रस्थान कर रही है; आगे - २ पुरुष अर्थी उठाये जा रहे है पीछे - २ विलाप करती महिलाये चल रही है ! अचानक ही सावित्री को वही संत - महात्मा सड़क की दूसरी ओर से आते हुए दिखाई दिये है; महिलाओ की भीड़ से हट कर के तो आदत के अनुरूप सावित्री ने संत - महात्मा के श्री चरणों को छुआ है !

सौभाग्यवती भव ! यह आशीर्वाद संत - महात्मा ने सावित्री के सिर पर हाथ रख कर के तो दिया है; यह सुनकर तो सावित्री की आँखों से आंसू बह निकले है !

* -क्या हुआ है बेटी ?

* -महाराज आप ने सौभाग्यवती होने का जो आशीर्वाद दिया है वह व्यर्थ ही है; मेरे सौभाग्य को तो शमशान में जलाने के लिए ले जाया जा रहा है !

संत-महात्मा मुस्कराते हुए कहते है - बेटी जब से परमात्मा ने मुझे अपनाया है तब से इस मुख से कभी असत्य वचन नहीं निकला ! आज भी इस मुख से तुम्हारे लिये जो आशीर्वाद निकला है उसमे भी प्रभु ही की कोई लीला रही होगी !

सत्य मानियेगा; सावित्री के पति को जब जलाने के लिए अर्थी पर लिटाया गया है तो वह जीवित उठ खड़ा हुआ है !

संत - महात्मा के आशीर्वाद का प्रताप कहियेगा इसे साधक जनों या सावित्री की विनम्रता का जो मरा हुआ व्यक्ति उठ खड़ा हुआ है ! सावित्री की विनम्रता ने ही मानो संत - महात्मा को आशीर्वाद देने के लिए विवश किया है !

अतःअपने माता - पिता बड़े - बजुर्गो एवं गुरुजनों के आगे झुकना सीखियेगा ! इन का हृदय से दिया हुआ आशीर्वाद हमारे जीवन की दशा और दिशा दोनों को बदल कर रख सकता है !

साधु व संतों का जब - जब तिरस्कार हुआ, सर्वनाश को रोका नहीं जा सका ! कलियुग में भी संतों का सम्मान गिरता जा रहा है।

क्या हम फिर से सर्वनाश को आमंत्रण दे रहे हैं? महाभारत काल की एक घटना से समझते हैं:- बात उस समय की है, जब पांडव अठारह दिन चले भीषण युद्ध में विजय प्राप्त कर चुके थे। पांडवों, कृष्ण और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में अश्वमेधयज्ञ करने का निर्णय हुआ।

अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा एक देश से दूसरे देश होते हुए आगे बढ़ता जा रहा रहा था। जो देश प्रतिकार करता उसे युद्ध में हराकर पांडवों की सेना आगे बढ़ जाती थी।

अंततः कई महीनों के बाद अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा वापस हस्तिनापुर (वर्तमान में दिल्ली) आ पहुंचा। यज्ञ के समापन के लिए हवन, संघति और पंघति का निर्णय लिया गया। सुदूर देशों तक के सभी राजाओं को यज्ञ में सम्मिलित होने का निमन्त्रण भेजा गया।

श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन में यज्ञकुण्ड के समीप ही एक बड़ा घंटा बांधा गया जिसे यज्ञ के समापन पर सबके भोजन ग्रहण कर लेने के बाद बजना था।

एक-एक कर सभी आमंत्रित और उपस्थित लोगों ने भोजन ग्रहण कर लिया फिर भी घंटा नहीं बजा। सबके साथ-साथ श्री कृष्ण को भी इस घटना पर बहुत आश्चर्य हुआ।

बहुत टटोलने पर भीम ने कृष्ण को बताया कि सुपक्ष नाम के संत को आमंत्रण नहीं दिया गया है। ऐसा ज्ञात होते ही श्री कृष्ण को बहुत धक्का लगा और वे स्वयं संत सुपक्ष के पास गये और अपने साथ सादर पुर्वक यज्ञ स्थल पर ले आये।

जैसे ही संत सुपक्ष ने भोजन का पहला ग्रास लिया, घंटा बजने लगा। पांडवों द्वारा किसी संत का तिरस्कार देख श्री कृष्ण का भाव पूर्णतः बदल गया और परिणाम स्वरूप श्री कृष्ण का ध्यान पांडवों पर से धीरे - धीरे हटने लगा।

वह तो कृष्ण की योगिक शक्ति ही थी जिसने एक-एक क्षण पूरे महाभारत युद्ध काल में उनकी कौरव महारथियों से रक्षा की। परन्तु सफलता के आवेग में आकर मानवता को भुला देना पांडवों से श्री कृष्ण की दूरी का कारण बना।

एक दिन वह घड़ी आ ही गयी जब अर्जुन उसी सफलता के आवेश में आकर कोल, भील और संथालों से जाकर भीड़ गया और हार तो हुई ही किसी प्रकार वीरगति को प्राप्त होने से बच गया।

वही अर्जुन था, वही गांडीव, वही बाण थे और कृष्ण के साथ के बिना अर्जुन की ऐसी दुर्दशा हुई। तभी यह कहने में सुना जाता है कि:-

मानुष बल नहीं होत है, समय होत बलवान।।

भीलन बन लुट लिए, वही अर्जुन वही बाण।।

एसडीएम अभिनव सिवाच ने किया लघु सचिवालय का औचक निरीक्षण

कर्मचारियों को समयबद्ध उपस्थिति और जनसमस्याओं के त्वरित समाधान के दिए निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़। एसडीएम अभिनव सिवाच (आईएएस) ने गुरुवार को बहादुरगढ़ स्थित लघु सचिवालय का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने विभिन्न कार्यालयों का जायजा लिया और कर्मचारियों को निर्देश दिए कि सभी अधिकारी व कर्मचारी समय पर अपने-अपने कार्यालयों में उपस्थित रहें तथा आमजन की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर निवारण सुनिश्चित करें। एसडीएम ने स्पष्ट कहा कि जनसमस्याओं के समाधान में किसी भी प्रकार की लापरवाही या कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। यदि किसी स्तर पर अनावश्यक देरी या उदासीनता पाई गई तो संबंधित कर्मचारी के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

निरीक्षण के दौरान एसडीएम अभिनव सिवाच ने लघु सचिवालय स्थित ई-दिशा केंद्र का भी अवलोकन किया। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी सेवाएं सरकार द्वारा निर्धारित शुल्क एवं नियमों के अनुरूप ही प्रदान की जाएं तथा नागरिकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

एसडीएम अभिनव सिवाच ने आमजन से अपील करते हुए कहा कि यदि लघु सचिवालय से संबंधित किसी भी समस्या के समाधान में उन्हें कोई कठिनाई आती है तो वे सीधे उनसे संपर्क कर सकते हैं। उन्होंने आश्वासन दिया कि प्रत्येक शिकायत का समयबद्ध और प्रभावी निपटारा किया जाएगा।

जिला के किसान जल्द बनवाएं एग्रीस्टैक फार्मर आईडी : डीसी

फार्मर आईडी को लेकर जिला के सभी गांवो में आयोजित किए जा रहे शिविर, फॉर्मर आईडी बना रही टीमें

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने किसानों से एग्रीस्टैक फार्मर आईडी बनवाने का किया आह्वान

परिवहन विशेष न्यूज, झज्जर। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि एग्री स्टैक फार्मर आईडी प्रत्येक किसान के लिए जरूरी है, इस आईडी के बनने के बाद ही सरकारी योजनाओं का लाभ मिलेगा, इसके लिए विभागीय टीमें गांवों में कैम्प लगाकर न केवल किसानों को जागरूक कर रही हैं, साथ ही फॉर्मर आईडी बनाने का कार्य जारी है।

किसान अपने गांवों में यह आईडी जल्द से जल्द बनवाकर टीमों का सहयोग करें। दूसरे किसानों को भी आईडी बनवाने के लिए प्रेरित करें। भविष्य में योजनाओं का लाभ एग्री स्टैक आईडी से ही मिलेगा। यह आईडी प्रत्येक किसान के लिए जरूरी है।

डीसी ने कहा कि अधिकारी गांवों में एग्रीस्टैक आईडी जनरेट कराएं, साथ ही किसान भी रूचि के साथ आईडी बनवाएं। साथ ही अधिकारी फार्मर आईडी कार्य की नियमित मानिटिरिंग करना सुनिश्चित करें। इस कार्य में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

*** *फार्मर आईडी से इन योजनाओं का मिलेगा लाभ***

डीसी ने कहा कि फार्मर आईडी बनाने का मुख्य मकसद किसानों की पहचान को सुरक्षित करने और उन्हें सरकारी सेवाओं के लाभ तक पहुंच प्रदान करना है। प्रत्येक किसान की एग्री स्टैक फार्मर आईडी हो, इसके लिए अधिकारी मिशन मोड में कार्य करें। उन्होंने बताया कि भविष्य में बैंक ऋण, पीएम किसान सम्मान निधि, क्षतिपूर्ति, खाद व बीज के अलावा कृषि अनुदान आधारित योजनाओं का लाभ आदि एग्री स्टैक फार्मर आईडी के माध्यम से दी जाएगी।

इन दस्तावेजों से बनेगी किसानों की फार्मर आईडी

डीसी ने बताया कि एग्रीस्टैक आईडी बनवाने के लिए किसानों को मोबाईल नंबर से लिंक आधार कार्ड, पिछली फसल के लिए मेरी फसल मेरा ब्यौरा पंजीकरण की प्रति या जमीन से जुड़ी फर्द साथ लाना जरूरी है। एग्रीस्टैक आईडी के लिए किसान स्वयं भी पंजीकरण कर सकते हैं। उन्होंने किसानों से जल्द से जल्द फॉर्मर आईडी बनवाने का आह्वान किया है।

स्कूलों में 17 जनवरी तक बढ़ा शीतकालीन अवकाश : डीसी

झज्जर, 15 जनवरी। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जानकारी देते हुए बताया कि कड़ाके की ठंड एवं शीतलहर की स्थिति को देखते हुए सभी विद्यालयों में शीतकालीन अवकाश को 17 जनवरी (शनिवार) तक बढ़ा दिया गया है। डीसी ने विद्यार्थियों के अभिभावकों से भी अपील की कि वे ठंड के मौसम में बच्चों के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें और प्रशासन द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का पालन करें।

पीएम सूर्य घर योजना को लेकर उपभोक्ताओं को जागरूक करें अधिकारी : एसडीएम

एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे ने अधिकारियों की बैठक में की पीएम सूर्य घर बिजली योजना की समीक्षा

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर। एसडीएम आईएएस अंकित कुमार चौकसे ने कहा कि नागरिकों को निर्बाध रुप से बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा पीएम सूर्य घर बिजली योजना प्रभावी रूप से लागू की जा रही है। विभागीय अधिकारी योजना को लेकर उपभोक्ताओं को जागरूक करें ताकि उपभोक्ताओं को योजना का लाभ मिल सके।

एसडीएम गुरुवार को अधिकारियों की बैठक में पीएम सूर्य घर बिजली योजना की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि योजना के व्यापक प्रचार प्रसार को लेकर विस्तृत कार्य योजना तैयार की जाए, ग्राम सभाओं के माध्यम से गांवों को पीएम सूर्यघर योजना से जोड़ा जाए। एसडीएम ने कहा कि गांवों में सरकार द्वारा योजना के माध्यम से प्रति कनैक्शन सम्बन्धित ग्राम पंचायतों को नियामानुसार विकास कार्यो के लिए प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी।

उन्होंने निगम अधिकारियों को योजना की नियमित मॉनिटरिंग के साथ साथ गांवों में विशेष जागरूकता कैंप आयोजित करने के निर्देश दिए, जिससे ग्रामीणों को योजना का लाभ प्रदान किया जा सके। कैंपो में योजना की विस्तार से जानकारी देते हुए प्रत्येक पात्र उपभोक्ता को बिजली बचत के साथ साथ मिलने वाली सब्सिडी से अवगत कराया जाए।

यह अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर एसडीएम बादली डा रमन गुप्ता, सीईओ जिला परिषद मनीष फौगाट, बिजली निगम के अधीक्षण अभियंता यशवीर सिंह, कार्यकारी अभियंता झज्जर प्रदीप कुमार, कार्यकारी अभियंता बहादुरगढ़ सचिन कुमार, कार्यकारी अभियंता बेरी प्रदीप कुमार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

समाधान शिविर से प्रशासन–जनता के बीच विश्वास मजबूत : डीसी

हर शिकायत का समयबद्ध व स्थायी समाधान प्राथमिकता : विभागाध्यक्ष

परिवहन विशेष न्यूज, झज्जर। जिला मुख्यालय स्थित लघु सचिवालय के सभागार में सोमवार को उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन किया गया। समाधान शिविर के दौरान उपायुक्त ने आमजन की समस्याएं सुनीं और संबंधित अधिकारियों को उनके समाधान के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिला स्तरीय समाधान शिविर में कुल 6 शिकायतें पंजीकृत की गईं।

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने विभागाध्यक्षों को निर्देश दिए कि जो शिकायतें दोबारा खुली हैं, उनके कारणों की गहनता से जांच कर गुणवत्तापूर्ण एवं स्थायी समाधान सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि संबंधित विभागाध्यक्ष स्वयं ऐसी शिकायतों पर संज्ञान लें और शिकायतकर्ता की संतुष्टि को ध्यान में रखते हुए समाधान करवाएं, ताकि वही शिकायत पुनः न खुले।

उपायुक्त ने कहा कि आमजन प्रशासन पर विश्वास करके अपनी समस्याएं लेकर समाधान शिविर में आते हैं, इसलिए प्राथमिकता के आधार पर लोगों की छोटी से छोटी समस्या का भी समाधान किया जाना चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि समाधान शिविर को केवल औपचारिकता न मानते हुए इसे जनसेवा का सशक्त माध्यम समझें और हर शिकायत का समयबद्ध व स्थायी समाधान सुनिश्चित करें।

उन्होंने आमजन से अपील की कि वे अपनी समस्याओं के समाधान के लिए निर्धारित दिन पर समाधान शिविर में पहुंचकर अपनी शिकायत दर्ज करवाएं।

इसके साथ ही उपमण्डल स्तर पर बहादुरगढ़, बादली एवं बेरी में आयोजित समाधान शिविरों में भी आमजन की शिकायतें सुनी गईं। जिला स्तरीय समाधान शिविर में सीईओ जिला परिषद मनीष फौगाट, एसीपी अनिल कुमार, डीआरओ मनबीर सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर, मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी खुशी कौशल, एक्सईएन लोक निर्माण विभाग सुमित कुमार, कष्ट निवारण कमेटी के सदस्य गौरव सिंह सहित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

फोटोः झज्जर लघु सचिवालय स्थित सभागार में सोमवार को आयोजित जिला स्तरीय समाधान शिविर में नागरिकों की शिकायतें सुनते उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल।

नागरिक अस्पताल बहादुरगढ़ में लेप्रोस्कोपिक से पित्त की थैली की सर्जरी सीएमओ

स्वास्थ्य सेवाओं में नियमित रूप से मिल रही है नि:शुल्क सुविधा

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़। सीएमओ डॉ मंजू कादियान ने बताया किनागरिक अस्पताल बहादुरगढ़ में वीरवार को लेप्रोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टॉमी (पित्त की थैली का ऑपरेशन) का सफलतापूर्वक किया गया। यह सर्जरी डॉ. अंकित, डॉ. दीपक एवं डॉ. विजय की विशेषज्ञ टीम द्वारा पूर्णतः सुरक्षित ढंग से संपन्न की गई। यह ऑपरेशन 60 वर्षीय बहादुरगढ़ निवासी महिला मरीज का किया गया, जो पूरी तरह सफल रहा। सर्जरी के उपरांत मरीज की स्थिति संतोषजनक है तथा वह चिकित्सकीय निगरानी में स्वस्थ है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के साथ ही अब सिविल अस्पताल बहादुरगढ़ में लेप्रोस्कोपिक सर्जरी की सुविधा नियमित रूप से उपलब्ध हो गई है, जिससे क्षेत्र के नागरिकों को बड़ी राहत मिलेगी। उल्लेखनीय है कि यह सर्जरी सिविल अस्पताल में पूर्णतः निःशुल्क की जा रही है, जबकि निजी अस्पतालों में इसी प्रकार की सर्जरी पर न्यूनतम लगभग 50 हजार रुपये तक का व्यय आता है।

डॉ मंजू कादियान ने बताया कि हरियाणा सरकार निरंतर स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार कर रही है ताकि नागरिकों को सरकारी अस्पतालों में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिले। सरकार के प्रयासों को धरातल पर साकार करने का संकल्प सभी डॉक्टर ने लिया है। नागरिक अस्पताल के प्रशासनिक अधिकारी डॉ देवेंद्र मेघा ने बताया कि निकट भविष्य में सिविल अस्पताल बहादुरगढ़ में लेप्रोस्कोपिक अपेंडेक्टॉमी (अपेंडिक्स का ऑपरेशन) की सुविधा भी शीघ्र प्रारंभ की जाएगी। इस पहल से न केवल मरीजों को उन्नत एवं आधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ अपने ही शहर में उपलब्ध होंगी, बल्कि आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को भी अत्याधुनिक सर्जरी का लाभ बिना किसी आर्थिक बोझ के मिल सकेगा। सिविल अस्पताल बहादुरगढ़ भविष्य में भी जनहित में ऐसी स्वास्थ्य सेवाएँ निरंतर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

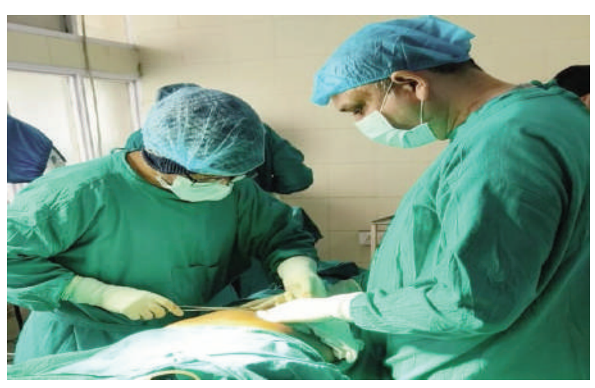

28वां राष्ट्रमंडल संसदीय अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों का सम्मेलन (सीएसपीओसी) 14-16जनवरी2026-लोकतंत्र, तकनीक और नागरिक सहभागिता क़े वैश्विक विमर्श का समग्र विश्लेषण

भारत में आयोजित यह सम्मेलन आने वाले वर्षों में राष्ट्रमंडल लोकतंत्रों के लिए दिशा–निर्देशक के रूप में याद किया जाएगा।

राजनीतिक ध्रुवीकरण, फेक न्यूज़, सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी नई तकनीकों का हस्तक्षेप क़े बीच सीएसपीओसी का आयोजन महत्वपूर्ण –

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर जनवरी 2026 में भारत की राजधानी नई दिल्ली एक ऐसे ऐतिहासिक और बहुआयामी संसदीय आयोजन की साक्षी बनी, जिसने न केवल राष्ट्रमंडल देशों की संसदीय परंपराओं को एक साझा मंच प्रदान किया, बल्कि 21वीं सदी के लोकतंत्र के सामने खड़ी जटिल चुनौतियों पर सामूहिक वैश्विक चिंतन का अवसर भी दिया। राष्ट्रमंडल देशों के संसदीय अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों का 28वां सम्मेलन, जिसे कॉमनवेल्थ स्पीकर्स एंड प्रेसाइडिंग ऑफिसर्स कॉन्फ्रेंस (सीएसपीओसी) कहा जाता है, अपने पैमाने, भागीदारी और विषयगत व्यापकता के लिहाज से अब तक का सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण आयोजन माना जा रहा है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी यहमानता हूं क़ियह सम्मेलन केवल एक औपचारिक संसदीय बैठक नहीं था, बल्कि यह लोकतंत्र के भविष्य, संसदों की प्रासंगिकता, तकनीकी बदलावों के प्रभाव और नागरिकों की बढ़ती अपेक्षाओं पर एक गंभीर वैश्विक संवाद का मंच बनकर उभरा।बता दें सीएसपीओसी की स्थापना का मूल उद्देश्य राष्ट्रमंडल देशों की संसदों के बीच संवाद, अनुभवों के आदान-प्रदान और श्रेष्ठ संसदीय प्रथाओं को साझा करना रहा है। यह मंच स्पीकर्स और पीठासीन अधिकारियों को इस बात पर विचार करने का अवसर देता है कि बदलती वैश्विक परिस्थितियों में संसदें किस प्रकार अपनी संवैधानिक भूमिका, निष्पक्षता और लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रख सकती हैं। 28वां सीएसपीओसी सम्मेलन इस परंपरा का विस्तार करते हुए एक ऐसे समय में आयोजित हुआ है, जब दुनियाँ भर में लोकतांत्रिक संस्थाएँ अनेक दबावों का सामना कर रही हैं राजनीतिक ध्रुवीकरण, फेक न्यूज़, सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी नई तकनीकों का हस्तक्षेप और नागरिकों का संस्थाओं पर घटता विश्वास। ऐसे संदर्भ में सीएसपीओसी का यह संस्करण केवल विमर्श का मंच नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक पुनर्संतुलन की दिशा में एक सामूहिक प्रयास के रूप में सटीक रूप से सामने आया।28वें सीएसपीओसी सम्मेलन का व्यापक कार्यक्रम 14 से 16 जनवरी 2026 के बीचआयोजित गतिविधियों और संसदीय संवादों की श्रृंखला के रूप में देखा गया, जबकि इसका औपचारिक और मुख्यआयोजन भारत की संसद द्वारा 14 से 16 जनवरी 2026 के बीच नई दिल्ली में आयोजित किया गया।भारत की संसद द्वारा इस सम्मेलन की मेजबानी अपने आप में एक महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक और कूटनीतिक संदेश देती है। दुनियाँ का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के नाते भारत ने यह दर्शाया कि वह न केवल लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का सफल क्रियान्वयन करता है, बल्कि वैश्विक लोकतांत्रिक विमर्श का नेतृत्व करने की क्षमता भी रखता है।इस सम्मेलन की सबसे उल्लेखनीय विशेषता इसकी अभूतपूर्व भागीदारी रही। कुल 42 राष्ट्रमंडल देशों के 61 स्पीकर्स और पीठासीन अधिकारी, साथ ही चार सेमी-ऑटोनॉमस संसदों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने इसेसीएसपीओसी के इतिहास का सबसे बड़ा सम्मेलन बना दिया। यह विशाल भागीदारी इस बात का संकेत है कि राष्ट्रमंडल के भीतर संसदीय संस्थाएँ आज जिन चुनौतियों से जूझ रही हैं, वे साझा हैं और उनके समाधान भी सामूहिक संवाद और सहयोग से ही संभव हैं। विविध भौगोलिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पृष्ठभूमियों से आए प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने इस मंच को वास्तव में वैश्विक और बहुसांस्कृतिक स्वरूप प्रदान किया।

साथियों बात अगर हम इस सम्मेलन के मुख्य विषयःबदलती संसदीय भूमिका को समझने की करें तो सीएसपीओसी 2026 के विमर्श का केंद्रबिंदु रहा, स्पीकर्स और पीठासीन अधिकारियों की बदलती भूमिका।पारंपरिक रूप से स्पीकर की भूमिका सदन की कार्यवाही को निष्पक्ष रूप से

संचालित करने तक सीमित मानी जाती रही है, किंतु आज यह भूमिका कहीं अधिक जटिल और बहुआयामी हो गई है।आधुनिक लोकतंत्र में स्पीकर न केवल प्रक्रिया के संरक्षक हैं, बल्कि वे संस्थागत गरिमा, विपक्ष और सत्ता के बीच संतुलन, और संसद की सार्वजनिक छवि के भी संरक्षक बन चुके हैं। सम्मेलन में इस बात पर गहन चर्चा हुई कि कैसे स्पीकर्स राजनीतिक दबावों, सोशल मीडिया के त्वरित निर्णय- निर्माण वाले माहौल और बढ़ते सार्वजनिक ध्रुवीकरण के बीच अपनी निष्पक्षता बनाए रख सकते हैं।

साथियों बात अगर हम संसदीय कामकाज में तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव को समझने की करें तो, सम्मेलन के सबसे चर्चित औरभविष्यपरक विषयों में से एक रहा, संसद में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग। संसद में एआईः इनोवेशन निगरानी और अनुकूलन में संतुलन विषय पर आयोजित सत्र का नेतृत्व मलेशिया ने किया।इस सत्र में यह स्पष्ट किया गया कि एआई संसदीय प्रक्रियाओं को अधिक कुशल, पारदर्शी और डेटा- आधारित बना सकता है, जैसे विधायी शोध, प्रश्नोत्तर प्रणाली, दस्तावेज़ प्रबंधन और नागरिक फीडबैक विश्लेषण।हालांकि, इसके साथ ही निगरानी, डेटा गोपनीयता एल्गोरिदमिक पक्षपात और लोकतांत्रिक जवाबदेही जैसे गंभीर प्रश्न भी जुड़े हुए हैं।सम्मेलन में इस बात पर सहमति बनी कि एआई को संसद का सहायक बनाया जाना चाहिए, निर्णायक नहीं। तकनीक का उद्देश्य लोकतांत्रिक मूल्यों को सशक्त करना होना चाहिए, न कि उन्हें कमजोर करना।सोशल मीडिया और सांसदों पर इसका प्रभाव-डिजिटल युग में सोशल मीडिया राजनीति और संसद दोनों के लिए एक शक्तिशाली लेकिन दोधारी तलवार बन चुका है। इस विषय पर आयोजित सत्र का नेतृत्व श्रीलंका द्वारा किया गया।चर्चा में यह सामने आया कि सोशल मीडिया ने सांसदों को सीधे जनता से जोड़ने का माध्यम तो दिया है, लेकिन इसके साथ ही त्वरित प्रतिक्रियाओं का दबाव, ट्रोलिंग, दुष्प्रचार और भावनात्मक राजनीति को भी बढ़ावा मिला है।कई देशों के प्रतिनिधियों ने साझा किया कि कैसे सोशल मीडिया ट्रेंड्स कभी-कभी संसदीय प्राथमिकताओं और विधायी विमर्श को प्रभावित करने लगते हैं।इस सत्र का निष्कर्ष यह रहा कि सांसदों और स्पीकर्स के लिए डिजिटल साक्षरता, आचार संहिता और संस्थागत दिशानिर्देशों की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

साथियों बात अगर कर हम मतदान से परे नागरिक सहभागिताः लोकतंत्र का विस्तार इसको समझने की करें तो, लोकतंत्र को केवल चुनाव और मतदान तक सीमित रखना आज की जटिल सामाजिक- राजनीतिक वास्तविकताओं में अपर्याप्त माना जा रहा है। इसी संदर्भ में संसद की सार्वजनिक समझ और मतदान से परे नागरिक भागीदारी को बढ़ानेके लिए अभिनव रणनीतियाँ विषय पर सत्र आयोजित किया, जिसमें नाइजीरिया और दक्षिण अफ्रीका ने प्रमुख योगदान दिया।इस सत्र में नागरिक सभाओं, डिजिटल कंसल्टेशन, युवाओं की संसदीय सहभागिता, और संसद-नागरिक संवाद मंचों जैसे नवाचारों पर चर्चा हुई। प्रतिनिधियों ने इस बात पर बल दिया कि जब नागरिक स्वयं को केवल मतदाता नहीं, बल्कि नीति-निर्माण प्रक्रिया का सहभागी मानने लगते हैं, तभी लोकतंत्र वास्तव में सशक्त होता है।

साथियों बात अगर हम इस मंच से प्रधानमंत्री का उद्घाटन संबोधन को समझने की करें तो, भारतीय लोकतंत्र का वैश्विक संदेश 15 जनवरी 2026 को सुबह 10:30 बजे, नई दिल्ली स्थित संसद भवन परिसर के संविधान सदन के केंद्रीय हॉल में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा 28वें सीएसपीओसी सम्मेलन का औपचारिक उद्घाटन किया गया। यह क्षण न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरे राष्ट्रमंडल के लिए प्रतीकात्मक महत्व रखता था।पीएम ने अपने संबोधन में कहा कि भारत में डेमोक्रेसी का अर्थ लास्ट माइल डिलीवरी है। उन्होंने स्पष्ट किया कि लोकतंत्र केवल संस्थाओं और चुनावों तकसीमित नहीं है, बल्कि उसका वास्तविक मूल्य तब सामने आता है जब शासन की नीतियाँ समाज के अंतिम व्यक्ति तक बिना किसी भेदभाव के पहुँचती हैं। पीएम ने अपने भाषण में लोक कल्याण की भावना को भारतीय लोकतंत्र की आत्मा बताया। उन्होंने कहा कि इसी दृष्टिकोण के कारण पिछले कुछ वर्षों में भारत में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकल सके हैं।यह कथन केवल एक सांख्यिकीय उपलब्धि का उल्लेख नहीं था, बल्कि यह उस मॉडल की ओर संकेत करता है जिसमें लोकतांत्रिक शासन को सामाजिक न्याय, समावेशन और विकास से जोड़ा गया है। अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों के लिए यह संदेश महत्वपूर्ण था कि लोकतंत्र तब मजबूत होता है जब वह लोगों के जीवन में ठोस बदलाव लाता है।

साथियों बात अगर हम भारत की लोकतांत्रिक भूमिकाः एक वैश्विक दृष्टिकोण इसको समझने की करें तो सीएसपीओसी 2026 के माध्यम से भारत ने स्वयं को केवल एक मेजबान देश के रूप में नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक विचारों के वैश्विक केंद्र के रूप में प्रस्तुत किया। भारत का अनुभव, विविधता, विशाल जनसंख्या, डिजिटल शासन और सामाजिक कल्याण अन्य राष्ट्रमंडल देशों के लिए सीख और प्रेरणा दोनों का स्रोत बना।सम्मेलन में यह स्पष्ट रूप से उभरा कि भारत लोकतंत्र का प्रयोगशाला ही नहीं, बल्कि लोकतंत्र के भविष्य पर विचार करने वाला एक प्रमुख वैश्विक हितधारक भी है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि 28वां राष्ट्रमंडल संसदीय अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों का सम्मेलन केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक आत्ममंथन का वैश्विक मंच था। तकनीक, सोशल मीडिया, नागरिक सहभागिता और संस्थागत भूमिका जैसे विषयों पर हुई चर्चाओं ने यह स्पष्ट किया कि लोकतंत्र स्थिर नहीं, बल्कि निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है।सीएसपीओएस 2026 ने यह संदेश दिया कि यदि संसदें प्रासंगिक रहना चाहती हैं, तो उन्हें नवाचार और परंपरा, स्वतंत्रता और जवाबदेही, तथा तकनीक और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन साधना होगा। भारत में आयोजित यह सम्मेलन आने वाले वर्षों में राष्ट्रमंडल लोकतंत्रों के लिए दिशा-निर्देशक के रूप में याद किया जाएगा।

विश्व वैष्णव सेवा संघ एवं राष्ट्रीय ब्राह्मण सेवा संघ द्वारा मनाया गया मकर संक्रांति महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गोधुलीपुरम स्थित श्रीहरिदास धाम में राष्ट्रीय ब्राह्मण सेवा संघ एवं विश्व वैष्णव सेवा संघ के संयुक्त तत्वावधान में मकर संक्रांति के उपलक्ष में खिचड़ी महोत्सव का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत वृहद स्तर पर खिचड़ी प्रसाद बनाकर संतो, भक्तों व ब्रजवासियों में वितरित की गई।

इस अवसर पर आयोजित सन्त-विद्वत संगोष्ठी की

अध्यक्षता करते हुए पंडित चंद्रलाल शर्मा ने कहा कि खिचड़ी महोत्सव समरसता का प्रतीक है और सामाजिक सौहार्द बढ़ाने वाला है। राष्ट्रीय ब्राह्मण सेवा संघ हर वर्ष खिचड़ी महोत्सव का आयोजन करता रहा है।

आचार्य आनंद बल्लभ गोस्वामी ने कहा कि इस बार विश्व वैष्णव सेवा संघ एवं राष्ट्रीय ब्राह्मण सेवा संघ संयुक्त रूप से खिचड़ी महोत्सव का आयोजन कर रहा है।इस बार जरूरतमंदों के लिए सैकड़ो कंबल, गद्दे, स्वेटर, टोपे एवं मोजे आदि की व्यवस्था की गई। इसके अतिरिक्त सबके लिए खिचड़ी तथा खीर की सेवा भी की गई।

पण्डित आर. एन. द्विवेदी उर्फ राजू भैया एवं आचार्य ब्रह्मदेव द्विवेदी ने कहा के नर नारायण की सेवा करना साक्षात ईश्वर की सेवा है। इस बार संयुक्त रूप से किया गया प्रयास निश्चित रूप से मानवता की सेवा में सहायक रहेगा।

इस अवसर पर महानगर अध्यक्ष गोविंद नारायण, मीडिया प्रभारी नीरज गौड़, अविनाश शर्मा, हरीश शर्मा एवं चिंतन गोस्वामी अल्का माहेश्वरी, अभिनव, गोपाल खंडेलवाल, बाबूलाल खंडेलवाल, सावित्री देवी करनानी, मालती खंडेलवाल, आशा, गीता, रेणु खंडेलवाल, दिनेश राजकरोसिया, मंजू निधि, अनीता लोहिया, जगदीश गुप्ता, सुनील चांडक, बाबूलाल खंडेलवाल, वामन वामने, दशरथ भीसीकर (नागपुर), संध्या खंडेलवाल, अशोक खंडेलवाल (खूंटेटा) आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

नवदीप सिंह

शिवली में भी सफल इंस्पेक्टर प्रवीन कुमार की कर्तव्यनिष्ठा, किसान हत्याकांड के सभी आरोपी गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। मामूली विवाद में हुए मलिकपुर गांव निवासी 55 वर्षीय किसान देवकीनंदन पासवान हत्याकांड का पुलिस की परिश्रम पूर्ण सक्रियता ने सटीक खुलासा कर दिया है। इस मामले में शिवली कोतवाल प्रवीन कुमार सिंह की अगुवाई में एसआई योगेंद्र कुमार द्वारा पुलिस टीम के साथ छापा मारकर गिरफ्तार किये गये इन आधा दर्जन आरोपियों के पास से 4 मोबाइल, एक हजार रुपये व हत्या में प्रयुक्त दो डंडा भी बरामद किए हैं।

प्राप्त जानकारी केमुताबिक शिवली कल्याणपुर मार्ग पर स्थित सुरभि एजूकेशन सेंटर में चौकीदार देवकीनंदन की पत्नी ममता तथा गोविंद सिंह की पत्नी संगम के बीच कहासुनी होने के साथ ही मारपीट हो गई थी। जिस पर गोविंद सिंह की पत्नी संगम के बुलाने पर आए नई बस्ती मिर्जापुर थाना कल्याणपुर कानपुर नगर में रह रहे उसके भाई आकाश छोटू, विजय सिंह उर्फ गोरे उसके साथी ग्राम गंगरौली थाना गजनेर हाल पता बारा सिरोही थाना कल्याणपुर निवासी अमन, ग्राम अठावल थाना ललौली जिला फतेहपुर हाल पता सनिगवां थाना चकेरी कानपुर नगर निवासी अनूप सिंह आदि ने देवकीनंदन पासवान की झोपड़ी पर धावा बोल, देवकीनंदन उसकी पत्नी ममता, पुत्री गोमती, खुशबू बेटू तथा पुत्र सूरज को मारपीट कर घायल कर दिया था। बाद में उपचार के दौरान देवकीनंदन की मौत हो गई थी ,जिसके बाद पुलिस ने पहले से दर्ज मारपीट के मुकदमे में हत्या की धारा तरमीम कर उनकी तलाश कर रही थी।

अवगत कराते चलें कि सभी हत्यारोपियों को गिरफ्तार करने के रूप में कानपुर देहात की जिस थाना शिवली पुलिस को यह महत्व पूर्ण सफलता मिली आजकल उस शिवली थाने की कमान हर तरह के अपराधियों के खिलाफ लगातार सफल मोर्चा खोले निर्दोष फंसे नहीं और अपराधी बचे नहीं जैसी लोकहित की प्रबल विचारधारा के अनुरूप अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई और पीड़ितों की हर संभव सहायता में भी अग्रणी निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली के भगवान और भाग्य यानी कर्म भरोसे रहने वाले तेजतर्रार, व्यवहार कुशल प्रभारी निरीक्षक इंस्पेक्टर प्रवीन कुमार के हाथ में है। सभी संगीन घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए अपनी जुझारू नौकरी के अबतक कार्यकाल में अनेक अपराधियों को जेल की हवा खिला चुके जुझारू इंस्पेक्टर प्रवीन कुमार सिंह यादव के अब तक के कार्यकाल के विवेचन से यह भी साबित होता है कि हालात चाहे जैसे रहे हों लेकिन उन्होंने अपनी कर्तव्य के प्रति निष्ठा के साथ समझौता आज तक नहीं किया।

इसी के साथ उनकी कार्यशैली भी संभ्रांत असहाय लोगों की हितरक्षक और बहुत मैत्रीपूर्ण भी मानी जाती है ,जिसके अनुरूप ही वह जहां उचित पात्र लोगों की हर संभव सहायता करते हैं। वहीं कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ शठे शाठ्यम समाचरेत वाली कहावत चरितार्थ करने से भी नहीं चूकते। यही वजह है कि इंस्पेक्टर प्रवीन कुमार की कर्तव्य के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा उनकी जुझारू नौकरी के अब तक के कार्यकाल में सभी संगीन घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए दर्जनों शातिरों को सबक सिखाने में भी सफल हो चुकी है।

स्टूडेंट्स को डिज़ास्टर मैनेजमेंट की दी जानकारी

लोंगोवाल,(जगसीर सिंह)- माननीय डिप्टी कमिश्नर बरनाला श्री टी. बेनिथ की गाइडेंस और काबिल गाइडेंस में और डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन ऑफिसर सेकेंडरी सुनीतिंदर सिंह और डिप्टी डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन ऑफिसर डॉ. बरजिंदरपाल सिंह की गाइडेंस में, प्रिंसिपल निदा अल्ताफ, स्कूल हेड परमजीत कौर, नेशनल डिज़ास्टर रिस्पॉन्स फोर्स ने गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल बडबर, डिस्ट्रिक्ट बरनाला में एक प्रैक्टिकल वर्कशॉप के ज़रिए स्टूडेंट्स और टीचर्स को नेचुरल डिज़ास्टर मैनेजमेंट की जानकारी दी। जिसमें 7th बटालियन नेशनल डिज़ास्टर रिस्पॉन्स फोर्स नेबठिंडा से सब-इंस्पेक्टर रेखा सिंह मीना और उनकी पूरी टीम सीनियर असिस्टेंट हरपाल सिंह के साथ स्कूल पहुंची। इस बारे में और जानकारी देते हुए मैडम परमजीत कौर ने बताया कि स्टूडेंट्स को नेचुरल डिज़ास्टर मैनेजमेंट के बारे में अवेयर करने के लिए टीम ने नेचुरल डिज़ास्टर से बचने के तरीके बताए, जो स्टूडेंट्स के लिए बहुत काम आएंगे। वर्कशॉप के दौरान मास्टर ट्रेनर नेशनल डिज़ास्टर रिस्पॉन्स फोर्स ने-इंस्पेक्टर रेखा सिंह मीणा और टीम ने स्टूडेंट्स को भूकंप, आग, पानी, बचाव के तरीके, चोट लगने पर सावधानियां, ब्लीडिंग कंट्रोल के तरीके और दूसरी कुदरती आफतों के दौरान जान-माल की सुरक्षा के बारे में प्रैक्टिकल जानकारी दी। स्टूडेंट्स को अलग-अलग कुदरती आफत मैनेजमेंट के दौरान इस्तेमाल होने वाले ज़रूरी इंस्ट्रक्शन का डेमो भी दिया गया। मोबाइल ऐप्स - सुचेत, मेघदूत, दामिनी और भूकंप के इस्तेमाल के बारे में जानकारी दी गई। इस मौके पर सीनियर टीचर ऋषि कुमार और अवनीश कुमार, अवतार सिंह ने कहा कि यह स्टूडेंट्स के लिए बहुत अच्छी जानकारी है क्योंकि आठवीं क्लास के सिलेबस में इसका पूरा लेसन कुदरती आफत मैनेजमेंट के बारे में होता है, ऐसे में आजकल स्टूडेंट्स के लिए ऐसी वर्कशॉप बहुत ज़रूरी है। जहां माहौल तेज़ी से बदल रहा है, वहीं स्कूल में समय-समय पर डिज़ास्टर मैनेजमेंट भी सिखाया जाता है। पूरे स्टाफ ने डिप्टी कमिश्नर बरनाला का खास शुक्रिया अदा किया, जिनकी वजह से यह काम मुमकिन हो पाया है। इस समय पूरा स्टाफ मौजूद था।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती पर मथुरा में मेगा मॉक ड्रिल एवं ब्लैक आऊट किया जायेगा

परिवहन विशेष न्यूज, मथुरा। 14 जनवरी 2026 नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती के अवसर पर जनपद मथुरा में आयोजित किए जाने वाले ब्लैक आउट मॉक ड्रिल की तैयारियों के संबंध में बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिलाधिकारी एवं नियंत्रक, नागरिक सुरक्षा चंद्र प्रकाश सिंह द्वारा की गई। बैठक में जनपद में प्रस्तावित ब्लैक आउट मॉक ड्रिल को सफलतापूर्वक आयोजित किए जाने हेतु विभिन्न विभागों द्वारा की जाने वाली तैयारियों एवं समन्वय व्यवस्था की विस्तृत समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि मॉक ड्रिल के दौरान नागरिक सुरक्षा के सभी स्वयंसेवक सक्रिय भूमिका निभाते हुए आमजन को जागरूक करें तथा किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए पूर्ण सतर्कता बरती जाए।बैठक में बताया गया कि मॉक ड्रिल के दौरान सायरन बजाकर ब्लैक आउट की प्रक्रिया का अभ्यास कराया जाएगा, विद्युत आपूर्ति नियंत्रित की जाएगी तथा नागरिकों को सुरक्षित स्थानों पर शरण लेने, आग बुझाने, प्राथमिक चिकित्सा एवं आपदा प्रबंधन से संबंधित उपायों की जानकारी दी जाएगी। अग्निशमन विभाग द्वारा आग बुझाने के उपकरणों का प्रदर्शन किया जाएगा तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्राथमिक उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। जिलाधिकारी ने पुलिस प्रशासन, विद्युत विभाग, स्वास्थ्य विभाग, अग्निशमन विभाग, नगर निकाय एवं अन्य संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ निर्धारित दायित्वों का निर्वहन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मॉक ड्रिल का उद्देश्य नागरिकों को आपात परिस्थितियों के प्रति सजग करना तथा आपदा के समय त्वरित एवं प्रभावी प्रतिक्रिया सुनिश्चित करना है। मुख्य रूप से ये मॉक ड्रिल रिफाइनरी परिसर में की जाएगी। बैठक में संबंधित विभागों के अधिकारी, नागरिक सुरक्षा विभाग के प्रभारी अधिकारी अपर जिला अधिकारी राजेश यादव ए डी सी नीरज श्रीवास्तव चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल, भारत भूषण तिवारी दीपक चतुर्वेदी बैंकर, राजेश कुमार मित्तल मास्टर ट्रेनर पोस्ट वार्डन इंजि.अशोक यादव जगदीश, आलोक व्यास आदि पदाधिकारी एवं अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

पोइसी टेल्स समूह द्वारा हुआ वार्षिक बहुभाषी काव्य गोष्ठी का आयोजन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

दिल्ली।मुलुंड पश्चिम के प्लेयस मैराथन मैक्सिमा के सभागार में पोइसी टेल्स समूह द्वारा वार्षिक बहुभाषी काव्य गोष्ठी का आयोजन धूमधाम से संपन्न हुआ।जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से आए रचनाकारों ने अपनी रचनाओं की लाजवाब प्रस्तुति दी।

अनुपमा कडवाड द्वारा स्थापित काव्य समूह विगत 5 वर्षों से साहित्य के क्षेत्र में अपना योगदान कर रहा है। कार्यक्रम में मराठी, हिंदी और अंग्रेजी भाषा के रचनाकारों ने अपनी-अपनी रचनाओं से समां बांधे रखा।लगभग 4 घंटे चले इस कार्यक्रम में स्नेहल साठे, शशिप्रिया गुंजल, रंजना, मीरा भंसाली, रीमा राय सिंह, शरद लाड, अंकित पारकर,अमित, शीतल राम कुमार, प्रसाद साल्वी, विकास सिंह, कल्पना त्रिपाठी पांडे, रश्मि तिवारी, दीपा राजपूत, कुमारन नादर, प्रज्ञा सुर्वे, डॉ. रश्मि तिवारी, राम्या तिवारी, अनघा कडवाड, प्राचेता घोसालकर आदि रचनाकारों ने अपनी लाजवाब रचनाओं से कार्यक्रम में चार चांद लगा दिया। इस अवसर पर कार्यक्रम की मुख्य आयोजक पोइसी टेल्स अनुपमा कड़वाड़, रुपाली गोरे लाळे, डॉ. सुबूही जाफ़र एवं रश्मि पेठे हैं आदि की उपस्थिति विशेष रही।

भागवत पीठ आश्रम में धूमधाम से मनाया गया मकर संक्रांति पर्व

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रुक्मिणी विहार रोड़ (निकट केशव धाम) स्थित भागवत पीठ आश्रम में सत्य सनातन सेवार्थ संस्थान चैरिटेबल ट्रस्ट, वृन्दावन के तत्वावधान में मकर संक्रांति का पावन पर्व अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ सम्पन्न मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य/भागवत पीठाधीश्वर वैष्णवाचार्य मारुति नंदनाचार्य ₹वागीश₹ महाराज ने कहा कि मकर संक्रांति भारतीय वैदिक संस्कृति एवं सनातन धर्म का विशेष पर्व है। भगवान सूर्य देव जब मकर राशि में प्रवेश करते हैं, तो मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है।साथ ही सूर्य की स्थित दक्षिणायण से निकलकर उत्तरायण हो जाती है।

इस अवसर पर अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश उमेश सिरोही, पूर्व पालिकाध्यक्ष पण्डित मुकेश गौतम, प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, प्रमुख भाजपा नेता पण्डित योगेश द्विवेदी, महोत्सव के मनोरथी श्रीमती ज्योति-दिनेश केसरवानी, श्रीमती हनीशा-दिव्यांश केसरवानी (सी.ए.), आचार्य नेत्रपाल शास्त्री, प्रख्यात भजन गायक पण्डित बनवारी महाराज, पूर्व पार्षद पण्डित विजय मिश्र, भागवताचार्य विपिन बापू महाराज, श्रीराम कथा मर्मज्ञ पण्डित अशोक व्यास, आचार्य सुरेशचन्द्र शास्त्री, डॉ. रामदत्त मिश्र, वरिष्ठ पत्रकार योगेश शर्मा, पण्डित राजेश कृष्ण शास्त्री, डॉ. राधाकांत शर्मा के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। महोत्सव में पधारे सभी आगंतुक अतिथियों का स्वागत युवराज श्रीधराचार्य महाराज द्वारा पटुका ओढ़ा कर किया गया।महोत्सव का समापन स्वरुचिपूर्ण भोज (दाल,बाटी, चूरमा) के साथ हुआ।

बंगाल की राजनीति को ध्रुवीकृत करने एक ऊंचा तमाशा

मोहम्मद सलीम, अनुवाद : संजय पराते)

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) सचमुच तभी सक्रिय होते हैं, जब चुनाव नज़दीक होते हैं।

केंद्रीय एजेंसियों द्वारा की गई छापेमारी से लोग काफी उत्तेजित हैं। ऐसा बार-बार होता है, लेकिन न तो आरोप पत्र दाखिल किया जाता है और न ही सज़ा सुनाई जाती है। चुनाव खत्म होने के बाद सब कुछ खत्म हो जाता है।

ईडी और सीबीआई मुख्य दोषियों को गिरफ्तार करने के बजाय उनके अपराधों पर पर्दा डाल रही हैं। शारदा चिट फंड घोटाला हुए 12 साल हो गए हैं। नारद घोटाला हुए ग्यारह साल बीत चुके हैं। फिर भी दोषियों पर मुकदमा नहीं चलाया गया है।

ईडी या सीबीआई को राजनैतिक औजार की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है। कहीं एजेंसियां बहुत ज़्यादा सक्रिय हैं, तो कहीं वे पूरी तरह निष्क्रिय रहती हैं। हम भ्रष्टाचार की जांच के पक्ष में हैं। लेकिन हम राजनैतिक सौदेबाजी के लिए जांच एजेंसियों के इस्तेमाल के खिलाफ हैं। हम केंद्रीय एजेंसियों के दुरूपयोग के खिलाफ हैं। ये एजेंसियां काबिल हैं, लेकिन उन्हें आज़ादी से अपना काम नहीं करने दिया जा रहा है।

शारदा केस में सीबीआई ने अदालत के आदेश पर जांच शुरू की थी, लेकिन एक दशक से ज़्यादा समय बीत जाने के बाद भी आज तक किसी को सज़ा क्यों नहीं मिली? हमारी आपत्ति जांच के खिलाफ नहीं है। दोषी को पकड़ा जाए -- हमने शुरू से ही यही मांग की है। हम ऐसी जांच की मांग करते हैं, क्योंकि जनता का पैसा लूटा गया है। लेकिन ईडी, सीबीआई और दूसरी एजेंसियों का इस्तेमाल करके भाजपा राजनैतिक फायदा उठाने की कोशिश करती है। यह बार-बार देखा गया है। चुनाव हारने के बाद भी वे पार्टियों को तोड़कर सरकारें बनाते हैं। इसी दुरुपयोग का हम विरोध कर रहे हैं। लोग जानते हैं कि इस सौदेबाजी में दोनों पक्ष शामिल हैं। अगर कोई भ्रष्टाचार करता है, तो उसे सज़ा मिलनी चाहिए। ईडी या सीबीआई जैसी एजेंसियों को राजनीतिक सौदेबाजी का हिस्सा नहीं बनना चाहिए। अन्यथा, भ्रष्ट लोग सिर्फ़ पार्टियां बदलते हैं, लेकिन भ्रष्टाचार खत्म नहीं होता।

इसलिए, कोलकाता में इंडियन पॉलिटिकल एक्शन कमेटी (आई-पैक) नाम के एक वोट व्यवसायी के परिसर में जो कुछ भी हुआ, वह पुराने नाटक का एक नया संस्करण है।

एक तरफ, ऐसी कार्यवाहियों से लोग भ्रष्टाचार के खिलाफ सज़ा वाले एक्शन का भ्रम पालने का शिकार हो जाते हैं, हालांकि अब तक आरोपियों का कुछ नहीं बिगड़ा है। इस समय की गई कार्यवाही का दूसरा पहलू यह है कि यह लोगों के असली मुद्दों को दबा देती है। जब बंगाल की जनता अपनी रोज़ी-रोटी से जुड़े असली मुद्दों पर लड़ने के मूड में है, तभी ईडी कोलकाता में मौके पर पहुँच गई।

बंगाल में असली मुद्दे क्या हैं? भारी बेरोज़गारी एक मुद्दा है। बड़े पैमाने पर पलायन एक मुद्दा है। पश्चिम बंगाल के परेशान प्रवासी मज़दूरों दूसरी जगहों पर अपने ज़िंदा रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन उन्हें परेशान किया जा रहा है, तंग किया जा रहा है और यहाँ तक कि उनकी हत्या भी की जा रही है। जो एसआईआर चल रहा है, वह साफ तौर पर असली मतदाताओं को बाहर निकालने की कारगुज़ारी है, जिसमें असमानताओं के बारे में अजीब दावे किए जा रहे हैं। मतदाता सूची को ठीक करने के नाम पर चलाई जा रही ऐसी गलत प्रक्रिया में हाशिये पर पड़े, गरीब और कमज़ोर तबके के लोग बलि का बकरा बन रहे हैं। अदालत के बार-बार फैसलों के बावजूद मनरेगा में 100 दिनों के काम की मज़दूरी अभी भी नहीं दी जा रही है। ग्रामीण गरीब कामकाजी महिलाएँ सूक्ष्म वित्त (माइक्रोफाइनेंस) कंपनियों के एजेंटों का सामना करते हुए बहुत परेशानी में हैं।

इन सब पर पर्दा डालने के लिए, भ्रष्टाचार के खिलाफ ऐसी जांच-पड़ताल की इस कार्रवाई का नाटक रचा गया है, ताकि राजनीतिक ध्रुवीकरण को मज़बूत किया जा सके।

छापामारी के दौरान दस्तावेजों को ज़ब्त करके पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और राज्य पुलिस ने एक आपराधिक काम किया है। इसी प्रकार की पिछली घटनाओं को याद करें। आरोप है कि मुख्यमंत्री ने भवानीपुर के एक पुलिस स्टेशन से बदमाशों को छुड़वाया था। आर जी कर अस्पताल में सबूतों को नष्ट करने के लिए टीएमसी के गुंडों ने तोड़फोड़ की थी। राजीव कुमार को पुलिस कमिश्नर के उसके कार्यकाल के दौरान सीबीआई की पूछताछ से बचाने के लिए मुख्यमंत्री अपने काफिले के साथ सड़कों पर थीं। उसी पटकथा पर बार-बार तमाशा किया जा रहा है। यह सब राजनीतिक हंगामा खड़ा करने के लिए किया जा रहा है। बहरहाल, ऐसी तमाशेबाजी को अब कोई तवज्जो नहीं मिलेगी, न ही लोग इस पर विश्वास करेंगे।

जब ईडी एक निजी कंपनी की तलाशी ले रही थी, तो राज्य पुलिस ने आकर दस्तावेज छीने और उन्हें एक ऐसी गाड़ी में लादा, जो न तो पुलिस की थी और न ही सरकार की। राज्य पुलिस के अधिकारियों, जिसमें राज्य पुलिस के महानिदेशक और कोलकाता के पुलिस कमिश्नर भी शामिल थे, के ऐसे गैर-कानूनी कामों ने इसे और भी ज़्यादा शर्मनाक बना दिया। वह गाड़ी 27 फरवरी, 2023 को टीएमसी पार्टी की संपत्ति के तौर पर पंजीकृत की गई थी। मुख्यमंत्री ने गुरुवार (8 जनवरी) को 'आई-पैक' ऑफिस का जिस तरह ज़िक्र किया, उससे ऐसा लगता है कि वह टीएमसी का पार्टी ऑफिस है।

प्रशांत किशोर की 'आई-पैक' ने चुनाव जीतने के लिए भाजपा की मदद की थी। बाद में उन्होंने पश्चिम बंगाल में टीएमसी के लिए काम किया था। अब इस कंपनी को प्रशांत किशोर के सहकर्मी प्रतीक जैन चला रहे हैं। कोयला तस्करी, पशु तस्करी, सोने की तस्करी और शिक्षक भर्ती घोटाले सहित कई भ्रष्ट तरीकों से कमाया गया काला धन इस संस्था में लगाया गया है। मौजूदा भ्रष्ट सरकार को बनाए रखने के लिए, टीएमसी ने 'आई-पैक' का इस्तेमाल मतदाता सूची में हेरफेर करने से लेकर मतदान केंद्रों और यहां तक कि मतगणना केंद्रों पर भी वोट लूटने के लिए किया है। मतदाता सूची के मौजूदा सारांश समीक्षा (समरी रिवीजन) के दौरान, 'आई-पैक' के कर्मचारी भेष बदलकर काम करते पाए गए थे। उन्होंने राज्य सरकार के कर्मचारियों-जैसा व्यवहार किया और उनके पास चुनाव आयोग के कर्तव्य-निर्वहन के लिए नियुक्ति पत्र भी मिले। यही वह तरीका है, जहां एक ओर मतदाता सूची में फर्जी नाम डालने की व्यवस्था की जा रही थी, वहीं दूसरी तरफ आम लोगों को परेशान किया जा रहा था। एसआईआर की प्रक्रिया के दौरान टीएमसी की यही भूमिका थी। चुनाव आयोग और ईडी को इन सब बातों की जानकारी है, लेकिन दोनों में से किसी ने भी इसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की है। 'कालीघाटेर काकू' के आवाज के नमूनों का मिलान होने के बाद ईडी ने 'लीप्स एंड बाउंड्स' की संपत्तियों को जब्त कर लिया, लेकिन अब तक भतीजे के घर पर कोई छापा नहीं पड़ा है। मुख्यमंत्री द्वारा 'आई-पैक' के दस्तावेजों को ठिकाने लगाने के बाद, वे फिर से कोई प्रभावी कदम उठाने में नाकाम रहे हैं।

दस दिनों के अंदर प्रधानमंत्री का राज्य का दौरा तय है। क्या कोई उम्मीद कर सकता है कि वह केंद्रीय एजेंसियों के खिलाफ राज्य प्रशासन के इस्तेमाल के बारे में कोई कार्रवाई करेंगे? 2014 के लोकसभा चुनावों से पहले, मोदी ने राज्य में टीएमसी शासन और केंद्र में भाजपा शासन के 'दो लड्डूओं' का वादा किया था। हमें याद है, पिछले चुनाव से पहले उन्होंने भ्रष्ट लोगों को जेल भेजने की बात कही थी। फिर भी, मुख्यमंत्री को बचाया गया है और मीडिया की रिपोर्टों के अनुसार, भ्रष्ट लोग एक-एक करके जेल से बाहर आ गए हैं।

जो तमाशा होना था, वह हो गया। इसने दिखाया कि ईडी और सीबीआई का इस्तेमाल राजनीतिक फायदे के लिए कैसे किया जा रहा है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री भी इसी तरह राज्य के पुलिस प्रशासन का इस्तेमाल कर रही हैं। इस माहौल में, जब शासक पार्टी के लोग खुले आम भ्रष्टाचार और गंभीर अपराध करते हैं, तब भी किसी भी दोषी को सही सज़ा नहीं मिलती। इसलिए, हम कहते हैं कि यह सिर्फ़ एक 'सेटिंग' है। हमें राजनीति को ध्रुवीकृत करने की इस कोशिश को तोड़ना होगा। हमें लोगों के मुद्दों को उठाना होगा।

(लेखक प. बंगाल माकपा के सचिव और पोलिट ब्यूरो सदस्य तथा पूर्व सांसद हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

खेल और फिटनेस किस प्रकार युवा-संचालित भारत को आकार दे रहे हैं

विजय गर्ग

भारतीय खेलों ने शानदार जीत के माध्यम से मानवता के स्पेक्ट्रम को पुनः परिभाषित किया है, जिससे क्रिकेट, शतरंज और कई अन्य क्षेत्रों में अपार प्रतिभाएं पैदा हुई हैं। खेल और फिटनेस में प्रशिक्षण राष्ट्र निर्माण अभ्यास का हिस्सा है और देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिकता रखता है। खेलों और फिटनेस में सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ाने के लिए समय की आवश्यकता है, जिससे स्टेडियमों, स्कूल और कॉलेज के खेल के मैदानों से लेकर कक्षाओं और सम्मेलन कक्षों तक खेल और फिटनेस में कौशल के बारे में सोच बदल जाए।

भारत ने वर्तमान दशक में खेलों, विशेषकर महिला खेल के क्षेत्र में बड़ी जीत हासिल की है, जिससे भारत कई ऊंचाइयों पर पहुंच गया है। विभिन्न खेल विषयों में मिली जीत ने भारत की अर्थव्यवस्था और वैश्विक स्थिति को भी बढ़ावा दिया है। भारतीय राज्यों ने खेलों और फिटनेस के विभिन्न क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण प्रतिभाशाली खिलाड़ियों का निर्माण किया है। 21वीं सदी में, भारत को दुनिया भर में खेल और फिटनेस (योग) में उत्कृष्टता का देश माना जाता है, साथ ही नवाचार और प्रौद्योगिकी में भी भारी वृद्धि हुई है। भारत राष्ट्रमंडल का सबसे बड़ा सदस्य राज्य है और खेलों में योगदान देना जारी रखता है, तथा 2030 में राष्ट्रमंडल खेल की मेजबानी करने का सौभाग्य प्राप्त करता है।

स्टेडियम से कक्षाओं तक

भारतीय खेलों ने शानदार जीत के माध्यम से मानवता के स्पेक्ट्रम को पुनः परिभाषित किया है, जिससे क्रिकेट, शतरंज और कई अन्य क्षेत्रों में अपार प्रतिभाएं पैदा हुई हैं। खेल और फिटनेस में प्रशिक्षण राष्ट्र निर्माण अभ्यास का हिस्सा है और देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिकता रखता है। खेलों और फिटनेस में सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ाने के लिए समय की आवश्यकता है, जिससे स्टेडियमों, स्कूल और कॉलेज के खेल के मैदानों से लेकर कक्षाओं और सम्मेलन कक्षों तक खेल और फिटनेस में कौशल के बारे में सोच बदल जाए। भारत सरकार विभिन्न खेलों और फिटनेस विषयों के लिए केंद्र स्थापित करके डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के लाभों का उपयोग करने की योजना बना रही है, जिससे भारत को दुनिया भर में चमकने और अद्वितीय बने रहने में मदद मिलेगी।

भारतीय खेल: एक युवा-केंद्रित मॉडल

खेल भारत, खेल भारत — भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का मशाल वाहक और मुख्य मंत्र-भारत को खेलों और फिटनेस में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करना है। यह युवा-केंद्रित मंत्र समग्र विकास का निर्माण करता है तथा भारत में खेल और फिटनेस पारिस्थितिकी तंत्र और संस्कृति की आंतरिक भावना पैदा करता है। फिट इंडिया के शुभारंभ से स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा मिला है तथा इसे युवाओं के दैनिक जीवन में शामिल किया गया है। खेल और फिटनेस में उत्कृष्टता, खेल और फिटनेस प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण प्रशिक्षक (टीओटी) कार्यक्रम से गुजरने में सक्षम बनाकर प्राप्त की जा सकती है, जिससे कई कौशल विकसित होंगे और युवाओं के लिए अतिरिक्त राजस्व भी उत्पन्न होगा।

खेल और फिटनेस में युवाओं को पुनः प्रशिक्षित करने और कौशल बढ़ाने के ठोस परिणामों में आत्म-अनुशासन, आत्मविश्वास, सहानुभूति, करुणा और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि विशेष रूप से महिलाओं में मानसिक और शारीरिक कल्याण में सुधार शामिल है। भारत सरकार ने औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) और राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से युवाओं को योग और आत्मरक्षा में प्रशिक्षित करने की योजना बनाई है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे और राष्ट्रीय क्रेडिट ढांचे के अनुरूप है।

खेल और फिटनेस में कौशल

भारत सरकार का लक्ष्य खेलों में इंटर्नशिप कार्यक्रम शुरू करना है, जिससे छात्र खेल प्रशासन, एंटी-डोपिंग परीक्षण और इवेंट प्रबंधन सीख सकेंगे। कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय, खेल मंत्रालय के साथ मिलकर आईटीआई छात्रों को प्रशिक्षित करने तथा उन्हें खेल, योग, फिटनेस और आत्मरक्षा में कुशल बनाने की योजना बना रहा है - जो अपनी तरह का पहला जीवन-कौशल और समुदाय-आधारित शिक्षण पहल है। आत्मरक्षा में प्रशिक्षण से युवा लड़कियों और महिलाओं के लिए आंतरिक शक्ति, आत्मविश्वास और प्रभावी सुरक्षा तंत्र विकसित होंगे।

एनएसएस और एनसीसी: समुदाय-आधारित शिक्षा

भारतीय शिक्षा प्रणालियों ने राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) और राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के माध्यम से प्रभावी फिटनेस कार्यक्रम अपनाए हैं, जो समग्र युवा विकास को बढ़ावा देते हैं। एनसीसी को विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में एक ऐच्छिक या विकल्प-आधारित क्रेडिट पाठ्यक्रम के रूप में पेश किया जाता है। एनएसएस और एनसीसी समुदाय-आधारित शिक्षा की रीढ़ हैं। ये घरेलू पहल एक मजबूत प्रतिभा पूल का निर्माण करती हैं और युवाओं को सशक्त बनाने में सहायक होती हैं। साथ मिलकर, वे युवाओं का पोषण करके और एक प्रशिक्षित प्रतिभा पूल बनाकर राष्ट्र को मजबूत करते हैं जो खेलों में उत्कृष्टता की ओर ले जाता है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

शिक्षा का मंदिर या डर का अड्डा? छात्राओं की सुरक्षा पर अब जागो, अन्यथा भविष्य अंधकारमय!

ज्ञान का भंडार या शोषण का अड्डा? (यौन उत्पीड़न के बढ़ते मामले और सामाजिक धारणा का भंग)

संजय कुमार बाठला

शिक्षा को हम सदियों से 'मंदिर' कहते आए हैं — ज्ञान, संस्कार और भविष्य निर्माण का पवित्र स्थान।

लेकिन आज हरियाणा से लेकर देशभर के स्कूल - कॉलेजों से निकल रही यौन उत्पीड़न, मानसिक शोषण और असुरक्षा की खबरें इस मंदिर को कब्रिस्तान बना रही हैं।

प्रोफेसरों पर आरोप, प्रबंधन की मिलीभगत और शिकायतों का दमन — यह कोई एक घटना नहीं, बल्कि व्यवस्थित संकट है।

जागो! क्या हमारा भविष्य सुरक्षित नहीं रहना चाहिए?

डर का जाल: पीड़िता क्यों चुप रहती है? (करियर, बदनामी और सामाजिक दबाव के मनोवैज्ञानिक प्रभाव)

पीड़ित छात्राएँ बोलने से काँपती हैं —

* करियर तबाह होने,
* बदनामी के डर से,
* संस्थान से निकाले जाने की धमकी से।
* यह डर अपराधियों को ताकत देता है और व्यवस्था को मौन समर्थन।

सवाल उठाओ! जब शिकायत ही जोखिम बन जाए, तो कानून क्या बेमानी नहीं हो जाता?

हरियाणा जैसे राज्यों में दर्जनों मामले दबे पड़े हैं — पीड़िता की चुप्पी अपराधी की ढाल है!

कागजी शेर: कानून हैं, लेकिन अमल कहाँ? (विशाखा दिशानिर्देश, पोश अधिनियम और आईसीसी की विफलता)

विशाखा दिशानिर्देश (1997), पोश अधिनियम (2013) और आंतरिक शिकायत समितियाँ (आईसीसी) — सब कागजों पर मजबूत हैं। लेकिन संस्थान इन्हें प्रबंधन के इशारों पर नचाते हैं, 'छवि बचाओ' के नाम पर मामले दबाते हैं।

क्रोधित हो जाओ! न्याय प्रक्रिया पीड़िता के लिए दूसरा उत्पीड़न क्यों बने?

* नियमित ऑडिट और स्वतंत्र आईसीसी की कमी घातक है!
* सत्ता का दुरुपयोग: शिक्षक - छात्रा असंतुलन की जड़ (मूल्यांकन और प्रमोशन की शक्ति का शोषण)
* शिक्षक-प्रबंधन के पास ग्रेडिंग, प्रमोशन और भविष्य तय करने की ताकत है।

इस असंतुलन का दुरुपयोग व्यक्तिगत वासना के लिए हो रहा है। आवाज़ दो! असहाय छात्रा को संरक्षण कौन देगा?

नैतिकता की कमी से 'शिक्षा मंदिर' विडंबना बन गया — शिक्षक ही मर्यादा लाँघें, तो छात्र क्या सीखें?

संवेदनशीलता की मृत्यु: शिक्षा केवल डिग्री तक सिमटी क्यों? (नैतिक शिक्षा और लैंगिक सम्मान की अनदेखी)

पाठ्यक्रम - डिग्री पर फोकस, नैतिकता भाषणों तक। लैंगिक सम्मान भूल गया। जागृति लाओ!

राज्य सरकारें हेल्पलाइन नंबर छापने से आगे बढ़ें — प्रभावी निगरानी, बाहरी महिला सदस्यों वाली आईसीसी और गोपनीय शिकायत तंत्र चाहिए!

मुख्य बिंदु: तथ्यों और आंकड़ों से जागरूकता

हरियाणा फोकस: 2023-25 में 50+ कॉलेज मामलों में प्रोफेसर दोषी, 70% शिकायतें दबी (एनसीआरबी डेटा)।

कानूनी ढाँचा: पोश अधिनियम अनिवार्य 10 सदस्यीय आईसीसी (50% महिलाएँ), लेकिन 60% संस्थानों में निष्क्रिय (UGC रिपोर्ट 2024)।

समाज की चुप्पी: पीड़िता पर सवाल—"क्यों गई?"— अपराधी को बचा रही है; सहानुभूति जरूरी!

समाधान: स्वतंत्र ऑडिट, पीड़िता सुरक्षा फंड, शिक्षक प्रशिक्षण अनिवार्य।

अपील:

* भरोसे का निर्माण करो, चुप्पी तोड़ो!
* राज्य सरकारें, संस्थान, समाज — सुनो!
* छात्रा निडर शिकायत करे,
* शिक्षक जवाबदेह बने,
* संस्थान छवि से ऊपर सुरक्षा चुनें।
* चुप्पी अपराध का साथी है — पीड़िता का साथ दो!
* शिक्षा रोजगार नहीं, संवेदनशील नागरिक बनाए।
* अब जागो, अन्यथा मंदिर कब्रिस्तान बनेगा!

कानून मजबूत है, नैतिक साहस जगाओ — भविष्य दाँव पर है!

शिक्षा और सुरक्षा के बीच फँसी छात्राएँ: यौन शोषण के अड्डे बनते स्कूल-कॉलेज

- डॉ. प्रियंका सौरभ

शिक्षा को भारतीय समाज में 'मंदिर' कहा जाता रहा है—एक ऐसा पवित्र स्थान जहाँ ज्ञान, संस्कार और भविष्य का निर्माण होता है। लेकिन हाल के वर्षों में जिस तरह से शिक्षण संस्थानों से यौन उत्पीड़न, मानसिक शोषण, डर और असुरक्षा की खबरें सामने आ रही हैं, उसने इस धारणा को गहरी चोट पहुँचाई है। सवाल यह नहीं है कि घटनाएँ हो रही हैं या नहीं, बल्कि यह है कि क्या हमारे स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय वास्तव में छात्राओं के लिए सुरक्षित हैं?

हरियाणा सहित देश के अनेक राज्यों में शिक्षा संस्थानों से जुड़े यौन उत्पीड़न के मामलों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि समस्या किसी एक संस्थान या एक व्यक्ति तक सीमित नहीं है। प्रोफेसरों पर आरोप, प्रबंधन की भूमिका, शिकायतों को दबाने की प्रवृत्ति और पीड़िताओं को चुप कराने का सामाजिक दबाव—ये सब मिलकर एक ऐसी संरचना बनाते हैं, जहाँ अपराध से ज्यादा खतरनाक हो जाता है उसका छिपाया जाना।

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि अधिकांश मामलों में पीड़ित सामने आने से डरती हैं। डर—करियर के खत्म हो जाने का, बदनामी का, संस्थान से निकाले जाने का और समाज द्वारा दोषी ठहरा दिए जाने का। यही डर अपराधियों को ताकत देता है और व्यवस्था को मौन रहने का बहाना। जब शिकायत करना ही जोखिम बन जाए, तब कानून की मौजूदगी भी बेमानी लगने लगती है।

कानून अपने स्तर पर मौजूद है। यौन उत्पीड़न से जुड़े नियम, आंतरिक शिकायत समितियाँ (आईसीसी), विशाखा दिशानिर्देश और पोश अधिनियम—सब कुछ कागजों में है। लेकिन वास्तविकता यह है कि कई संस्थानों में ये समितियाँ या तो नाममात्र की हैं या फिर प्रबंधन के प्रभाव में काम करती हैं। शिकायतकर्ता को न्याय दिलाने के बजाय मामले को "संस्था की छवि" के नाम पर दबाने की कोशिश की जाती है। यही कारण है कि न्याय की प्रक्रिया पीड़िता के लिए एक और मानसिक उत्पीड़न बन जाती है।

शिक्षण संस्थानों में सत्ता का असंतुलन भी इस समस्या की जड़ में है। शिक्षक, प्रबंधन और प्रशासन के पास मूल्यांकन, नियुक्ति, प्रमोशन और भविष्य तय करने की शक्ति होती है। इस शक्ति का दुरुपयोग जब व्यक्तिगत इच्छाओं के लिए किया जाता है, तो छात्रा या जूनियर स्टाफ खुद को असहाय महसूस करता है। यही असहायता अपराध को जन्म देती है और अपराधी को संरक्षण।

एक और गंभीर मुद्दा है—संवेदनशीलता की कमी। शिक्षा केवल पाठ्यक्रम और डिग्री तक सीमित हो गई है। नैतिकता, लैंगिक सम्मान और मानवीय मूल्यों की बात भाषणों तक सिमट गई है। जब शिक्षक ही मर्यादा लांघते दिखाई दें, तो छात्रों को समाज से क्या संदेश जाता है? ऐसे में "शिक्षा का मंदिर" कहना एक विडंबना बनकर रह जाता है।

राज्य सरकारों और शिक्षा विभागों की जिम्मेदारी यहीं खत्म नहीं होती कि वे आदेश जारी कर दें या हेल्पलाइन नंबर छपवा दें। ज़रूरत है प्रभावी निगरानी की, नियमित ऑडिट की और स्वतंत्र शिकायत तंत्र की। शिकायत समिति में बाहरी, निष्पक्ष और महिला प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य होनी चाहिए। शिकायत की गोपनीयता और पीड़िता की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता हो—यह केवल नियम नहीं, व्यवहार में दिखना चाहिए।

समाज की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। जब तक हम पीड़िता से सवाल पूछते रहेंगे—"वहाँ क्यों गई?", "पहले क्यों नहीं बताया?"—तब तक अपराधी बेखौफ रहेगा। दोषी कौन है, यह तय करने की जिम्मेदारी कानून की है, लेकिन सहानुभूति और समर्थन समाज को देना होगा। चुप्पी तटस्थता नहीं, बल्कि अपराध के पक्ष में खड़ा होना है।

आज आवश्यकता है भरोसे की—ऐसे भरोसे की, जिसमें छात्रा निडर होकर शिकायत कर सके; शिक्षक अपने आचरण के प्रति जवाबदेह हों; और संस्थान अपनी छवि से ज्यादा अपने छात्रों की सुरक्षा को महत्व दें। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि सुरक्षित और संवेदनशील नागरिक तैयार करना भी है।

यदि सच में हमें शिक्षा को मंदिर बनाए रखना है, तो पहले उसे डर, शोषण और मौन की संस्कृति से मुक्त करना होगा। कानून मजबूत है, पर उससे ज्यादा मजबूत होना चाहिए संस्थानों का नैतिक साहस। क्योंकि जब शिक्षा असुरक्षित हो जाती है, तो केवल वर्तमान नहीं, पूरा भविष्य खतरे में पड़ जाता है।

ईरान, ट्रंप और प्रतिरोध की राजनीति

- डॉ. सत्यवान सौरभ

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में कुछ संघर्ष केवल सीमाओं या संसाधनों तक सीमित नहीं होते, वे विचारधाराओं, सत्ता-संतुलन और नैतिकता की भी परीक्षा लेते हैं। ईरान और अमेरिका के बीच दशकों से चला आ रहा टकराव ऐसा ही एक संघर्ष है, जो समय-समय पर नए रूपों में सामने आता रहा है। डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान यह टकराव जिस तीव्रता और आक्रामकता के साथ उभरा, उसने वैश्विक राजनीति को एक बार फिर शीतयुद्धोत्तर दौर की अस्थिरता की याद दिला दी।

1979 की इस्लामी क्रांति के बाद से ही ईरान अमेरिका की रणनीतिक और वैचारिक राजनीति का लक्ष्य रहा है। अमेरिका ने ईरान को केवल एक राष्ट्र-राज्य के रूप में नहीं, बल्कि एक वैकल्पिक राजनीतिक मॉडल के रूप में देखा—ऐसा मॉडल जो पश्चिमी प्रभुत्व, इज़राइल-केन्द्रित पश्चिम एशिया नीति और अमेरिकी साम्राज्यवादी सोच को चुनौती देता है। यही कारण है कि ईरान पर आर्थिक प्रतिबंध, कूटनीतिक अलगाव और सैन्य दबाव लंबे समय से अमेरिकी विदेश नीति का हिस्सा रहे हैं।

डोनाल्ड ट्रंप के शासनकाल में यह नीति और अधिक कठोर, असंवेदनशील और टकरावपूर्ण हो गई। 2015 में ईरान और विश्व शक्तियों के बीच हुए परमाणु समझौते (JCPOA) से अमेरिका का एकतरफा हटना न केवल कूटनीतिक असंतुलन का उदाहरण था, बल्कि यह भी दर्शाता था कि ट्रंप प्रशासन अंतरराष्ट्रीय सहमति और बहुपक्षीयता को किस हद तक नज़रअंदाज़ करने को तैयार था। इसके बाद ईरान पर "अधिकतम दबाव नीति" लागू की गई, जिसका उद्देश्य ईरानी अर्थव्यवस्था को घुटनों पर लाना और शासन को आंतरिक विद्रोह की ओर धकेलना था।

लेकिन इतिहास साक्षी है कि दबाव हमेशा झुकाव पैदा नहीं करता। कई बार वह प्रतिरोध को जन्म देता है। ईरान के मामले में भी यही हुआ। आर्थिक कठिनाइयों, प्रतिबंधों और अंतरराष्ट्रीय अलगाव के बावजूद ईरान ने अपने राजनीतिक अस्तित्व, संप्रभुता और वैचारिक पहचान को बनाए रखा। यहाँ यह समझना ज़रूरी है कि ईरान का विरोध केवल अमेरिका की नीतियों से नहीं है, बल्कि उस वैश्विक व्यवस्था से है जिसमें कुछ गिने-चुने देश स्वयं को न्यायाधीश और शेष दुनिया को अभियुक्त मान लेते हैं। "जैसी करनी वैसी भरनी" का सिद्धांत केवल नैतिक कहावत नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भी गहराई से लागू होता है। पश्चिम एशिया में दशकों तक किए गए अमेरिकी हस्तक्षेप—इराक, अफगानिस्तान, लीबिया और सीरिया—ने क्षेत्र को स्थिरता नहीं, बल्कि अराजकता दी। लोकतंत्र के नाम पर सत्ता परिवर्तन, मानवाधिकारों के नाम पर सैन्य आक्रमण और आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध के नाम पर निर्दोष नागरिकों की हत्या—इन सबने अमेरिका की नैतिक साख को गहरा नुकसान पहुँचाया। ऐसे में जब ईरान अमेरिकी प्रभुत्व को चुनौती देता है, तो वह केवल अपनी रक्षा नहीं कर रहा, बल्कि उस व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगा रहा है, जो ताकत को ही न्याय मानती है।

ट्रंप की विदेश नीति का एक और खतरनाक पहलू उसका व्यक्तिवादी और आवेगपूर्ण स्वभाव था। कूटनीति संवाद और धैर्य से चलती है, जबकि ट्रंप की राजनीति ट्वीट, धमकी और शक्ति-प्रदर्शन पर आधारित थी। ईरानी जनरल क़ासिम सुलेमानी की हत्या इसी मानसिकता का परिणाम थी। यह घटना न केवल अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन थी, बल्कि इसने पूरे पश्चिम एशिया को युद्ध के मुहाने पर खड़ा कर दिया। इसके बाद ईरान की प्रतिक्रिया ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब वह केवल सहने की नीति पर नहीं चल रहा।

ईरान की राजनीति को अक्सर पश्चिमी मीडिया में कट्टर, दमनकारी और पिछड़ा बताकर प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन यह चित्रण अधूरा और एकांगी है। ईरान की जनता ने बार-बार यह साबित किया है कि वे बाहरी हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करेंगे, चाहे वह कितनी भी आकर्षक शब्दावली में क्यों न लपेटा गया हो। ईरान में सरकार की आलोचना होती है, विरोध होते हैं, लेकिन जब बात राष्ट्रीय संप्रभुता की आती है, तो जनता और सत्ता एकजुट दिखाई देते हैं। यही वह तत्व है जिसे पश्चिमी रणनीतिकार अक्सर समझने में चूक जाते हैं।

भारत जैसे देशों के लिए यह पूरा परिदृश्य एक गंभीर चेतावनी भी है और अवसर भी। ईरान भारत का पारंपरिक मित्र रहा है—ऊर्जा सुरक्षा, क्षेत्रीय संपर्क (चाबहार बंदरगाह) और मध्य एशिया तक पहुँच के लिहाज़ से ईरान का महत्व असंदिग्ध है। लेकिन अमेरिका के दबाव में भारत का ईरान से दूरी बनाना उसकी स्वतंत्र विदेश नीति पर प्रश्न खड़े करता है। किसी भी संप्रभु राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों को किसी तीसरे देश की नाराज़गी के डर से गिरवी न रखे।

आज वैश्विक राजनीति एक संक्रमण काल से गुज़र रही है। एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था की पकड़ ढीली पड़ रही है और बहुध्रुवीयता का उदय हो रहा है। ऐसे में ईरान जैसे देश, जो लंबे समय से दबाव और प्रतिबंधों के बीच खड़े रहे हैं, नए शक्ति-संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। रूस-चीन-ईरान के बढ़ते समीकरण इस बदलाव के संकेत हैं। यह स्पष्ट होता जा रहा है कि अब दुनिया केवल वाशिंगटन के इशारों पर नहीं चलेगी।

अंततः प्रश्न यह नहीं है कि ईरान सही है या अमेरिका गलत। वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या वैश्विक राजनीति में शक्ति ही न्याय का एकमात्र पैमाना होगी, या फिर अंतरराष्ट्रीय कानून, संप्रभुता और समानता के सिद्धांतों को वास्तविक सम्मान मिलेगा। यदि बड़े राष्ट्र अपनी करनी से दुनिया को डराते रहेंगे, तो भरनी के रूप में उन्हें अस्थिरता, अविश्वास और प्रतिरोध ही मिलेगा।

ईरान और ट्रंप के दौर की अमेरिकी राजनीति हमें यही सिखाती है कि दमन से स्थायित्व नहीं आता, और धमकी से सम्मान नहीं मिलता। इतिहास अंततः उसी का पक्ष लेता है जो अपनी संप्रभुता, आत्मसम्मान और जनता की चेतना के साथ खड़ा रहता है। और शायद यही "जैसी करनी वैसी भरनी" का सबसे बड़ा राजनीतिक अर्थ है।

स्त्री शिक्षा की राह में चमकता तारा

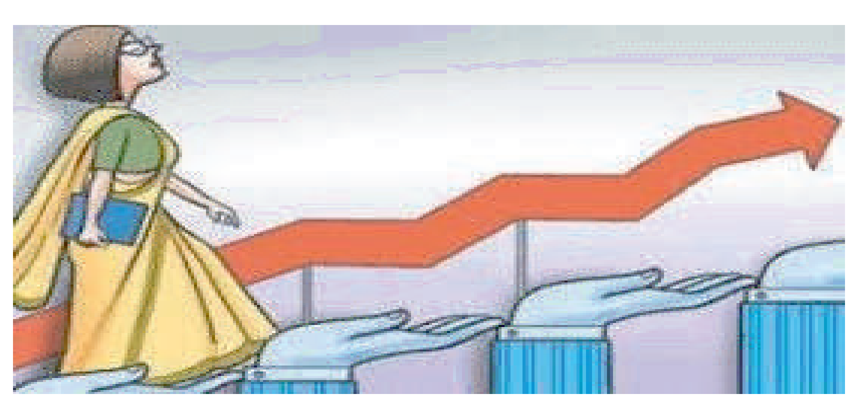

डॉ विजय गर्ग

शुक्र ग्रह पर एक 'क्रेटर' का नाम जोशी है। धरती पर मुख्यधारा की आबादी में जिस काम में सिद्धहस्त होना पुरुषों के लिए सहज गौरव की बात होती है, वहां महिलाओं के लिए पूरा असहजता का आसमान होता है। आज किसी महिला डाक्टर का नाम सुनते ही दिल में सम्मान का भाव आता है। पर महिलाओं के लिए यह भाव हासिल करना उतना आसान नहीं था। इस राह पर चलने के लिए आनंदी गोपाल जोशी ने इतनी मुश्किलें उठाई कि उनके सम्मान में शुक्र ग्रह के 'क्रेटर' का नाम रखा गया। आनंदी गोपाल का जन्म 31 मार्च 1865 को महाराष्ट्र के कल्याण में हुआ था। उनका बचपन का नाम

यमुना बाई था। महज नौ साल की उम्र में यमुना का विवाह गोपाल राव जोशी से हुआ। गोपाल राव जोशी ने अपनी ब्याहता को आनंदी बाई का नाम दिया। गोपाल राव प्रगतिशील मानसिकता के इंसान थे व स्त्री शिक्षा के महत्त्व को समझते थे। उन्होंने अपनी बालिका वधू को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। चौदह साल की उम्र में आनंदी ने एक बच्चे को जन्म दिया,

जिसकी मृत्यु हो गई। अपने नवजात की मृत्यु का आघात मिलने के बाद आनंदी ने डाक्टर बनने का संकल्प लिया। गोपाल राव जोशी तत्कालीन समय में हर तरह की संकीर्णताओं से मुक्त थे। उन्हें अहसास था कि डाक्टरी की पढ़ाई विदेश में करनी जरूरी है। पति के सहयोग और अपनी मेहनत से आनंदी गोपाल ने 1886 में अमेरिका के पेंसिल्वेनिया में मेडिकल कालेज से एमडी की उपाधि हासिल की। वे भारत लौटीं और यहां कोल्हापुर के अल्बर्ट एडवर्ड अस्पताल में महिला वार्ड की प्रभारी बनीं। कुदरत की विडंबना रही कि जिस स्त्री ने स्त्रियों का जीवन लंबा और सेहतमंद करने के लिए इतना संघर्ष किया, उसकी फरवरी 1887 में महज 22 साल में तपेदिक से मृत्यु हो गई।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

न्याय व्यवस्था में जमानत और गरीबी का सवाल

अमरपाल सिंह वर्मा

राजस्थान हाईकोर्ट के एक हालिया फैसले ने उस व्यवस्था पर सवाल खड़े किए हैं जिसमें जमानत और पैरोल की शर्तें कई बार गरीब कैदियों के लिए राहत नहीं बल्कि एक और सजा बन जाती हैं। कोर्ट ने हाल में उम्रकैद की सजा भुगत रहे एक कैदी खरताराम की चिट्ठी को ही याचिका मानकर सुनाए गए फैसले में कहा है कि गरीबी कोई अपराध नहीं है और न ही यह किसी व्यक्ति को उसके अधिकारों से वंचित करने का आधार बन सकती है। पाली जिले का निवासी खरताराम हत्या के एक मामले में 2014 से सजा काट रहा है। जिला पैरोल कमेटी ने 29 सितंबर 2025 को उसे चौथी बार 40 दिन की नियमित पैरोल पर रिहा करने का आदेश दिया लेकिन इसके साथ 25-25 हजार रुपए के दो जमानती पेश करने की शर्त जोड़ दी गई। आर्थिक रूप से बेहद कमजोर होने के कारण खरताराम यह शर्त पूरी नहीं कर सका। उसके पास वकील करने तक के पैसे नहीं थे, इसलिए उसने जेल से ही पोस्टकार्ड भेजकर हाईकोर्ट से गुहार लगाई।
हाईकोर्ट ने न केवल उसकी याचिका सुनी बल्कि इस फैसले को ऐसे मामलों में एक नजीर के रूप में स्थापित कर दिया। अदालत ने स्पष्ट कहा कि पैरोल या जमानत की शर्तें तय करते समय अधिकारियों को मशीनी रवैया छोडक़र मानवीय और संवैधानिक दृष्टि अपनानी होगी।
यह फैसला केवल एक कैदी को राहत देने तक सीमित नहीं है बल्कि यह उस व्यापक समस्या की ओर इशारा करता है जिसमें देश में हजारों गरीब कैदी फंसे हुए हैं। सवाल केवल पैरोल का नहीं है। सवाल उस व्यापक ढांचे का है जहां जमानत, पैरोल और अर्थदंड जैसे कानूनी प्रावधान गरीब व्यक्ति के लिए राहत नहीं बल्कि नई सजा बन जाते हैं। देश की जेलों में आज भी बड़ी संख्या में ऐसे कैदी बंद हैं जिन्हें अदालतें जमानत या पैरोल दे चुकी हैं लेकिन पैसे के अभाव में वे सलाखों के पीछे ही पड़े हैं। कई ऐसे भी हैं जिनकी सजा की अवधि पूरी हो चुकी है मगर जुर्माना भरने में असमर्थ होने के कारण उन्हें रिहाई नहीं मिल पा रही। इस तरह कानून की प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद भी कैद केवल इसलिए जारी रहती है क्योंकि वह व्यक्ति गरीब है। इसका सबसे सीधा असर जेलों पर पड़ता है। जेलें अपनी निर्धारित क्षमता से कहीं अधिक भरी हुई हैं। विचाराधीन बंदियों की संख्या बहुत बड़ी है। जेलों में भीड़ के कारण कम जगह तथा सीमित संसाधनों का परिणाम खराब स्वास्थ्य सुविधाओं के रूप में निकलता है। जेलों में अपराधियों को रखने के पीछे सुधार का मूल उद्देश्य भटक चुका है।
यह समस्या कितनी गंभीर है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 26 नवंबर 2022 को संविधान दिवस के अवसर पर स्वयं राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू को कहना पड़ा कि देश की जेलों में हजारों ऐसे कैदी बंद हैं जिनके पास जमानत पर रिहाई का कोर्ट आदेश तो है लेकिन जमानत राशि के पैसे नहीं हैं। उन्होंने अदालतों और सरकार से इन कैदियों के लिए समाधान निकालने की अपील की थी। राष्ट्रपति की इस टिप्पणी के दो दिन बाद ही सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए केंद्र और राज्यों से रिपोर्ट तलब कर ली। इसके बाद फरवरी 2023 में सर्वोच्च अदालत ने इस मुद्दे पर सात महत्वपूण्र दिशा निर्देश जारी किए। अदालत की मंशा साफ है कि जमानत आदेश की सार्थकता तभी है, जब वह वास्तव में किसी को जेल से बाहर ला सके।
सुप्रीम कोर्ट के समक्ष पेश एक रिपोर्ट में सामने आया कि जनवरी 2023 तक 5,380 ऐसे कैदी थे, जिन्हें जमानत मिल चुकी थी लेकिन वे अब भी जेलों में बंद थे। सबके मामलों में कारण पैसे का अभाव का ही था। 2023 में ही सुप्रीम कोर्ट ने ट्रायल अदालतों को निर्देश दिए कि वे जमानत की शर्तें तय करते समय कैदियों की आर्थिक स्थिति पर भी विचार करें। अदालत ने साफ शब्दों में कहा कि अगर जमानत की शर्तें कैदी की हैसियत से परे हैं तो ऐसी जमानत का कोई अर्थ नहीं रह जाता। राजस्थान हाईकोर्ट का फैसला भी इसी सोच की अगली कड़ी है। सुप्रीम कोर्ट की इसी संवैधानिक सोच का अनुसरण करते हुए राजस्थान हाई कोर्ट ने अब यह महत्वपूर्ण फैसला दिया है। इसमें हाईकोर्ट ने माना है कि पैरोल एक सुधारात्मक अधिकार है, यह अमीरों का विशेषाधिकार नहीं है।
कोर्ट ने अधिकारियों की उस प्रवृत्ति पर कड़ी नाराजगी जताई है जिसमें हर मामले में एक जैसी जमानत शर्तें थोप दी जाती हैं। यह भी नहीं देखा जाता है कि कैदी उन्हें पूरा करने की स्थिति में है या नहीं। हाई कोर्ट द्वारा जारी की गई छह सूत्रीय गाइडलाइन से इस बात का संकेत मिलता है कि अदालतें अब केवल आदेश देने तक सीमित नहीं रहना चाहतीं, बल्कि उसके प्रभावी क्रियान्वयन पर भी बल देना चाहती हैं। अदालतें बार-बार निर्देश दे रही हैं लेकिन बड़ा सवाल है कि नीतियों और आदेशों का धरातलीय क्रियान्वयन क्यों नहीं हो पा रहा है? सुप्रीम कोर्ट पहले ही अनावश्यक गिरफ्तारी, रिमांड और जमानत के बावजूद जेल में बंद रखने की प्रवृत्ति पर नाराजगी जता चुका है। कोर्ट ने गरीब कैदियों की मदद के लिए एक मानक प्रक्रिया और फंड की व्यवस्था की बात भी कही है लेकिन अधिकांश राज्यों में यह पहल धरातल पर पहुंचने का इंतजार है। हाल में हरियाणा सरकार ने फैसला किया है कि वह गरीब कैदियों को जमानत या जुर्माना भरने में आर्थिक सहायता देगी। जमानत के लिए एक लाख रुपये तक और जुर्माने के लिए 25 हजार रुपये तक दिए जाएंगे। यह एक सकारात्मक कदम है जिसे अपवाद नहीं बल्कि नियम बनाया जाना चाहिए। सभी राज्यों को ऐसी योजनाएं लागू करनी होंगी।
जमानत और पैरोल की शर्तें तय करते समय आर्थिक स्थिति का वास्तविक आकलन होना चाहिए। जिला स्तर पर ऐसे तंत्र विकसित करने की जरूरत है, जो यह सुनिश्चित करें कि किसी व्यक्ति को केवल गरीबी के कारण जेल में न रहना पड़े। गरीब कैदी अपनी बात अदालत तक पहुंचा सकें, यह सुनिश्चित करने के लिए कानूनी सहायता सेवाओं को मजबूत करना होगा क्योंकि जरूरी नहीं कि हर जज किसी कैदी के पोस्टकार्ड को याचिका मान ही ले। जेलों को दंड के नहीं बल्कि सुधार के स्थान के रूप में देखने की सोच विकसित की जरूरत है। ऐसा होने पर ही अदालती फैसलों को सही मायने में कियान्वित किया जा सकेगा। समाधान साफ हैं, बस इच्छाशक्ति की जरूरत है।

क्या ईरान में इस्लामी शासन एक सोची-समझी क्रूर रणनीति का नतीजा है?

रामस्वरूप रावतसरे

ईरान एक बार फिर उबल रहा है। तेहरान की सड़कों से लेकर कुर्दिस्तान के पहाड़ों तक, 'तानाशाही मुर्दाबाद' के नारे गूंज रहे हैं लेकिन यह पहली बार नहीं है। पिछले 17 वर्षों में ईरान कई बार इस दोराहे पर खड़ा हुआ है। हर बार जब जनता सड़कों पर उतरती है तो दुनिया को लगता है कि शायद इस बार इस्लामी गणराज्य की नींव हिल जाएगी लेकिन जैसे ही धूल छंटती है, अयातुल्ला का शासन और भी क्रूरता के साथ अपनी जगह पर कायम नजर आता है। आज वही पुराने सवाल फिर से फिजाओं में तैर रहे हैं कि आखिर ईरानी सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए क्या करना होगा? हम कैसे जानेंगे कि हम उस निर्णायक मोड़ पर पहुंच गए हैं जहां से वापसी मुमकिन नहीं है? और सबसे बड़ा सवाल कि इतनी कोशिशों के बावजूद हर बार नाकामी ही क्यों हाथ लगती है?

ईरान के इस्लामी शासन का टिके रहना कोई चमत्कार नहीं है बल्कि यह एक बेहद सोची-समझी और क्रूर रणनीति का नतीजा बताया जा रहा है। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक- दुनिया के किसी भी अन्य देश की तुलना में, ईरान के पास अपने ही नागरिकों के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए सबसे गहरा, सबसे व्यापक और सबसे प्रभावी सुरक्षा तंत्र है।

ईरानी सत्ता की सबसे बड़ी ताकत उसकी सेना नहीं बल्कि 'इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स' (आईआरजीसी) और उसका अर्धसैनिक बल 'बासिज' है। बासिज कोई साधारण पुलिस बल नहीं है। यह समाज के भीतर बुना हुआ एक ऐसा नेटवर्क है, जिसमें आपके पड़ोसी, दुकानदार या साथ पढ़ने वाला छात्र भी मुखबिर हो सकता है। बासिज को शासन के दमनकारी मूल्यों की रक्षा करने का काम सौंपा गया है। जब विरोध होता है तो ये सादे कपड़ों में भीड़ में घुस जाते हैं, नेताओं की पहचान करते हैं और हिंसक कार्रवाई करते हैं। जानकारों के अनुसार चूंकि इनकी निष्ठा देश के प्रति नहीं बल्कि सुप्रीम लीडर के प्रति होती है, इसलिए ये अपनी ही जनता पर गोली चलाने में हिचकिचाते नहीं हैं।

ईरानी सरकार ने विद्रोह को कुचलने के लिए एक मनोवैज्ञानिक युद्ध की नीति अपनाई है। मानवाधिकार समूहों और जेल से रिहा हुए कैदियों की गवाही बताती है कि सरकार अब सिर्फ मारने में विश्वास नहीं करती, वह 'तोड़ने' में विश्वास करती है। अक्सर, सुरक्षा बल प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार करते हैं और उन्हें जेल में अमानवीय यातनाएं देते हैं लेकिन उन्हें हमेशा के लिए जेल में रखने के बजाय, कई बार उन्हें तब रिहा कर दिया जाता है। जब वे बुरी तरह पिट चुके होते हैं, उनका शरीर और मन टूट चुका होता है। इसके पीछे एक भयानक तर्क है कि जब एक मोहल्ले का लड़का जेल से वापस आता है और उसकी हालत देखकर उसके दोस्त और परिवार वाले सहम जाते हैं तो यह दूसरों के लिए डरावना सबक बन जाता है। इसे देखकर लोग ऐसी हरकतें नहीं करते।

ईरान में इंटरनेट शटडाउन तो आम बात है लेकिन वहां का सर्विलांस उससे कहीं आगे है। ऑनलाइन कंटेंट की निगरानी करने वाले हजारों 'साइबर जासूस' तैनात हैं। वे सोशल मीडिया पर असंतोष की छोटी सी चिंगारी को भी आग बनने से पहले बुझाने का काम करते हैं।

जानकारों के अनुसार ईरान में सत्ता परिवर्तन के लिए जरूरी होगा कि सुरक्षा बलों का पाला बदले लेकिन यह किसी भी क्रांति की सफलता की सबसे बड़ी कुंजी है। जब तक बंदूक थामने वाले हाथ सरकार के साथ हैं, सरकार सुरक्षित है। ईरानी सरकार के गंभीर रूप से गिरने के खतरे के लिए, यह अनिवार्य है कि सुरक्षा बलों की एक बड़ी संख्या विशेषकर नियमित सेना और पुलिस न कि आईआरजीसी पाला बदलकर प्रदर्शनकारियों में शामिल हो जाए या कम से कम, वे निहत्थे लोगों पर गोली चलाने से इनकार कर दें। ऐसा अभी तक नहीं हुआ है। अयातुल्ला शासन आईआरजीसी और बासिज को इतना आर्थिक लाभ दिया जाता है कि वे अंत तक वफादार बने रहते हैं।

अब तक के आंदोलनों की सबसे बड़ी कमजोरी रही है कि उनके पास कोई चेहरा नहीं था। सरकार को गिराने के लिए एक ऐसे नेतृत्व की जरूरत है जो न केवल भीड़ को दिशा दे सके बल्कि सुरक्षा बलों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ भी बातचीत कर सके। बिना किसी स्पष्ट विकल्प के बहुत से लोग मौजूदा खराब व्यवस्था को अराजकता से बेहतर मानते हैं। ईरान की क्रांति (1979) तब सफल हुई थी जब तेल कर्मचारियों और बाजारियों यानी व्यापारी वर्ग ने हड़ताल कर दी थी। सरकार को घुटनों पर लाने के लिए देश की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह ठप करना होगा। जब तक तेल बिक रहा है और पैसा रिवोल्यूशनरी गार्ड्स तक पहुंच रहा है, वे दमन जारी रखेंगे।

ईरान में गत 17 सालों में कई कोशिशें हुई लेकिन सब फेल हो गई। 2009 ग्रीन मूवमेंट हुआ कारण था विवादित राष्ट्रपति चुनाव। लोगों ने पूछा- "मेरा वोट कहां है?" लाखों लोग सड़कों पर उतरे। यह 1979 के बाद सबसे बड़ा प्रदर्शन था लेकिन सरकार ने बेरहमी से कुचल दिया। सैकड़ों मारे गए, विपक्षी नेताओं (मीर हुसैन मौसवी, मेहदी करौबी) को नजरबंद कर दिया गया। यह आंदोलन मुख्य रूप से राजनीतिक था और मध्यम वर्ग तक सीमित था।

इसी प्रकार वर्ष 2017-2018 में आर्थिक विद्रोह हुआ। वजह थी बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार। यह आंदोलन तेहरान से नहीं बल्कि छोटे शहरों और गरीब तबकों से शुरू हुआ था। नारे थे- सुधारवादी, कट्टरपंथी खेल खत्म हुआं लेकिन सुरक्षा बलों ने हजारों को गिरफ्तार किया। चूंकि इसका कोई केंद्रीय नेतृत्व नहीं था, इसलिए इसे दबाना आसान था।

वर्ष 2019 में पेट्रोल की कीमतों में अचानक 200 प्रतिशत की बढ़ोतरी होने पर विद्रोह हुआ. बताया जा रहा है ईरान में यह सबसे हिंसक प्रदर्शन था। लोगों ने पेट्रोल पंप और बैंक जला दिए। इसे दबाने के लिए सरकार ने इंटरनेट पूरी तरह बंद कर दिया और सेना उतार दी। रिपोर्ट्स के मुताबिक महज तीन दिनों में 1500 से ज्यादा लोग मारे गए। यह शासन की क्रूरता का चरम था।

विकसित @2047 के लिए युवा

डॉ. बालमुकुंद पांडे

विकसित भारत की संकल्पना युवाओं के रचनात्मक कार्य क्षमता एवं रचनात्मक संरचनात्मक ऊर्जा से ही संभव है। भारतवर्ष वैश्विक स्तर पर सर्वाधिक युवा आबादी वाला राष्ट्र हैं जिसमें देश की 28.2% यानी 40 करोड़ आबादी '15-29' आयु - वर्ग की हैं। यह आयु - वर्ग नवाचार, विकास, ग्राहय एवं अधिगम के लिए सर्वाधिक उपर्युक्त आयु होती है। राष्ट्र के इस ऊर्जावान युवा वर्ग में राष्ट्र के उत्थान एवं प्रत्येक भारतीयों के जीवनस्तर को गुणात्मक बनाए रखने की क्षमता, धारिता, और योग्यता होती है। युवाओं के सक्रिय भागीदारी एवं ऊर्जावान दक्षता से राष्ट्र को सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक (राजनैतिक) समृद्धि के लिए उत्प्रेरित करने की अनंत, असीमित, अपार एवं असीम क्षमता होती है।

युवाओं को बौद्धिक ईमानदारी, सामाजिक समावेशिता, राष्ट्रीय जिम्मेदारी एवं राष्ट्रीय मूल्यों को अपने जीवन का आधार बनाना चाहिए। इनके शिक्षा का उद्देश्य 'आत्मनिर्भर' बनना है। युवाओं की संकल्प, संकल्पित क्षमता, ऊर्जा एवं नवाचार के द्वारा ₹विकसित भारत @2047₹ को प्राप्त कर लेंगे। भारत के युवाओं में इस संकल्प को साकार करने की असीमित क्षमता है। देश के युवाओं में सांस्कृतिक अभिव्यक्ति एवं बौद्धिक विमर्श का जीवंत क्षमता है। विकसित भारत के निर्माण के प्रति युवाओं की प्रतिबद्धता एवं समर्पण असाधारण हैं। नवीन विचारों को ग्राह्म करने की युवाओं में अपार संभावनाएं और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए युवा शक्ति समर्पित है।

विश्व विद्यालयों, महाविद्यालयों, कॉलेजों, एवं स्कूलों में 'युवा संगम', 'विमर्श संगोष्ठी', 'व्याख्यान श्रृंखलाएं' एवं 'नेतृत्व क्षमता अभ्यास कार्यक्रम' होने से युवाओं में अभिप्रेरणा, उनमें इन कार्यक्रमों के प्रति मनोबल, ऐसे व्याख्याताओं की तरह बनने की ललक एवं नेतृत्व क्षमता अभ्यास के द्वारा व्यक्तित्व- निर्माण के लिए अपार संभावनाएं होती हैं जो युवाओं के ऊर्जा को बौद्धिक क्षितिजीकरण करके चरित्र - निर्माण, व्यक्ति - निर्माण एवं राष्ट्र- निर्माण में प्रेरित करते हैं। इन सकारात्मक प्रयासों के संकलित प्रभाव से युवाओं में विकास भावना को उन्नयन करने में सहयोग ली जा रही है जो भविष्य में एक प्रकार से सतत विकास की मानवीय पूंजी सृजित करता है। इन शैक्षणिक निकायों से ऊर्जावान उद्दीपक निकालकर समाज, राज्य, एवं राष्ट्र में सकारात्मक योगदान करते हैं। भारत असीम, अपार, एवं असीमित संभावनाओं का राष्ट्र हैं, जिससे समय-समय पर ऊर्जावान नेतृत्व निकलते हैं, जो देश एवं काल में राष्ट्र में महनीय भूमिका निभाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में युवा प्रतिभाओं को विकसित भारत के निर्माण में सहयोग के लिए प्रेरित करके उनके ऊर्जा का सदुपयोग किया जा सकता है।

युवाओं की नेतृत्व एवं भागीदारी समाज के विकास व राष्ट्र - निर्माण में सक्रिय सहभागिता एवं लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को उन्नयन करने के लिए अतिमहत्वपूर्ण होती है। युवा नवीनता एवं परिवर्तन की अत्यधिक ऊर्जा रखते हैं जिससे सामाजिक समस्याओं के समाधान, सामाजिक समस्याओं के समाधान के वाहक, सामाजिक परिवर्तन के चालक एवं प्रेरणादायक व प्रभावशाली भूमिका प्रदान करते हैं। भारत के युवा आबादी भारत की बड़ी मानवशक्ति हैं, जो समस्याओं के समाधान के प्रति नवोन्मेष दृष्टि अपनाते हैं। युवाओं के भीतर उत्साह व कार्य करने का जुनून होता है, उनके भीतर परिश्रम करने की क्षमता होती है, सपने साकार करने का मनोबल होता है। उनके कार्य के परिणाम से मिली सफलता देश की सफलता होती है। देश ने विगत 11 वर्षों से ₹विकसित भारत @2047₹का संकल्प लिया है। इसकी संपूर्ति में सबसे ज्यादा योगदान युवाओं की है। युवाओं का सशक्तिकरण विकसित भारत की प्राथमिकता है।

2024 में देश में विश्वविद्यालयों की संख्या 1213 हो गई है। यह विस्तार राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के बेहतर एवं गुणात्मक क्रियान्वयन के लिए हुआ है। उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या 59000 हो गई है जिससे अधिकांश युवाओं को बेहतर भविष्य के लिए बेहतरीन संस्थाएं उपलब्ध हो रहे हैं। पिछले 11 वर्षों में चिकित्सा शिक्षा में बेहतर प्रदर्शन हुआ है। मेडिकल कालेजों की संख्या 387 से बढ़कर 780 हो गई है और मेडिकल सीटों में 130% की वृद्धि हुई है। आईआईटी और आईआईएम की संख्या भी क्रमशः 23 एवं 20 हो गए हैं जिससे शीर्ष स्तर की शिक्षा तक पहुंच सरल हो गया है। इस तीव्र बदलाव का परिणाम हुआ है कि नूतन पीढ़ी के तकनीशियन, प्रबंधन विशेषज्ञ और चिकित्सा विशेषज्ञ प्राप्त हुए हैं जो राष्ट्र की सेवा लगन से कर रहे हैं। भारतीय विश्वविद्यालय QS रैंकिंग में उच्च स्थान प्राप्त कर रहे हैं। वैश्विक स्तर पर भारतीय युवा वैज्ञानिकों ने नवोन्मेष व विकास में नूतन योगदान दे रहे हैं। अद्यतन में कानपुर आईआईटी के युवा वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में वायु प्रदूषण की समस्या से निजात के लिए महत्वपूर्ण एवं ऊर्जावान प्रयास करके समस्या के समाधान की दिशा में सकारात्मक भूमिका निभा रहे हैं।

अतीत से वर्तमान समय तक युवाओं ने सामाजिक जिम्मेदारी की भूमिका में सक्रिय सहयोग दिया है। युवा देश के विकास में ईमानदारी से कार्य कर रहे है जो देश के विकास में उनकी भूमिका का संकलन है। युवाओं का इस समाज व देश के प्रति संकल्पित सामाजिक जिम्मेदारी है, जिनको संपूरित करना उनका नैतिक कर्तव्य है। नूतन ऊर्जा से भरा सकारात्मक चिंतन एवं चरित्रवान अवयव से देश को ऊंचाइयों तक ले जा रहे है। भारत में संयुक्त राज्य अमेरिका की संपूर्ण आबादी से ज्यादा युवा आबादी रहती है।

व्यंग्य: नंबर वन का 'अमृत' और नरक का ड्रेनेज

विवेक रंजन श्रीवास्तव

इंदौर में इन दिनों गजब का द्वंद्व चल रहा है। एक तरफ आसमान से टपकती स्वच्छता की 'नंबर वन' की ट्राफियां हैं और दूसरी तरफ जमीन फाड़कर निकलता 'भागीरथपुरा' का सच। सूचना मिली है कि प्रशासन ने अपनी चिर-परिचित फुर्ती दिखाते हुए कुछ अधिकारियों का 'स्थानांतरण' कर दिया है। वाह! क्या गजब का इलाज है। जैसे किसी का अपेंडिक्स फट गया हो और डॉक्टर उसका बिस्तर बदल दे। साहब यहाँ से वहाँ हुए नहीं कि सिस्टम का पाप धुल गया. सुना है नए साहब के आते ही पुरानी पाइपलाइन ने शर्म के मारे जहर उगलना बंद कर दिया है।
भागीरथपुरा, नाम कितना पवित्र है। महाराज भगीरथ ने गंगा लाने के लिए अंगूठे पर खड़े होकर तपस्या की थी ताकि पूर्वजों को तार सकें पर हमारे आधुनिक भगीरथों (इंजीनियरों) ने पाइपलाइन बिछाते समय ऐसी 'तपस्या' की कि अमृत योजना की नली को सीधे ड्रेनेज की नाली से 'कनेक्ट' कर दिया। अब पुरखे तरें न तरें, मोहल्ले वाले सीधे इस लोक को छोड़ मोक्ष की यात्रा पर निकल पड़े। यह सरकारी मोक्ष ही है, बस फर्क इतना है कि यह यमराज द्वारा नहीं बल्कि नगर निगम द्वारा 'स्पॉन्सर्ड' है।
इस पूरी त्रासदी के पीछे जो 'महान कलाकार' छिपा है, वह है, सरकारी ठेकेदार। यह वह प्रजाति है जो लोहे के पाइप को कागज की तरह मोड़ सकती है और कंक्रीट में इतनी रेत मिला सकती है कि रेगिस्तान को भी शर्म आ जाए। ठेकेदार साहब का गणित एकदम स्पष्ट है, "ऊपर की सड़क ऐसी बनाओ कि मुख्यमंत्री का काफिला निकले तो झटका न लगे और नीचे पाइप ऐसा डालो कि अगली बारिश तक गायब हो जाए।" टेंडर की मलाई और कमीशन के खेल में पाइपलाइन की मोटाई इतनी कम रह गई कि सीवेज के कीड़ों ने उसे 'डोरस्टेप डिलीवरी' का रास्ता समझ लिया। ठेकेदार के लिए 'अमृत' का मतलब वह 'प्रसाद' है जो उसे फाइल पास होने के बाद मिलता है, जनता का गला सूखे या सड़े, इससे उसके बैंक बैलेंस का 'फ्लो' नहीं रुकता।
शहर का चेहरा तो इतना चमकीला है कि आप अपनी शक्ल डिवाइडर पर देख लें। दीवारों पर नाचते मोर हैं, स्वच्छता के गान गाती गाड़ियाँ हैं और हर खंभे पर मुस्कराते नेताओं के पोस्टर हैं। पर इस चमक-धमक के नीचे शहर क्या 'पाल' रहा है, यह तब पता चलता है जब अस्पताल के बेड कम पड़ जाते हैं। यहाँ मोहल्ला राजनीति का भी अपना स्वैग है। "हमारे भाईसाहब" का वोट बैंक बना रहे, इसलिए पाइपलाइन चाहे गटर के भीतर से निकले या शौचालय के नीचे से, बस 'नल' चलना चाहिए। पार्षद जी को चिंता इस बात की नहीं थी कि पानी में बैक्टीरिया हैं, उन्हें चिंता इस बात की थी कि उद्घाटन के पत्थर पर उनका नाम बड़ा है या नहीं। चुनावी गणित में 'शुद्ध पेयजल' से ज्यादा जरूरी 'मुफ्त का टैंकर' होता है, ताकि संकट के समय मसीहा बना जा सके।
जब जनता का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँचा, तो नेताओं ने अपना अचूक ब्रह्मास्त्र निकाला, 'स्थानांतरण'। कलेक्टर साहब हटा दिए गए, कमिश्नर साहब विदा कर दिए गए। जनता दुख भूल कर फटाफट खुश हो गई! उसे लगा कि 'न्याय' हो गया। अरे भाई, साहब तो बदल गए पर वह सड़ा हुआ सिस्टम और वह लीकेज वाली पाइपलाइन तो वहीं है जो पिछले दस सालों से ड्रेनेज को चूम रही है। यह तो वही बात हुई कि इंजन खराब है और आप बार-बार ड्राइवर बदल रहे हैं। राजनेता जानते हैं कि पब्लिक की याददाश्त और पानी का स्वाद, दोनों बहुत जल्दी बदल जाते हैं।
रही बात समाधान की, तो हुजूर! समाधान किसी फाइल या तबादले में नहीं बल्कि इस 'स्मार्ट' चश्मे को उतारने में है। जल्दी ही मजबूर जनता जीने के लिए अपने घरों में यूरेका के असरदार वाटर फिल्टर खुद लगा ही लेगी। तब तक बिसलेरी की बोतलों से नहाने का सौभाग्य मिलेगा।
पर यह कौन बताए कि असली 'अमृत' जल तब बरसेगा जब ड्रेनेज और पेयजल की लाइनों के बीच की दूरी कम से कम उतनी कर दी जाएगी जितनी एक चुनाव से दूसरे चुनाव के बीच नेता और जनता की होती है। बेहतर होगा कि अगली बार 'स्मार्ट सिटी' का तमगा देने से पहले दीवारों के पेंट की जगह पाइपों के 'प्रेसर' की जाँच की जाए। समाधान तो यह भी है कि जिस ठेकेदार और इंजीनियर ने यह महान 'जुगलबंदी' की है, उन्हें तब तक उसी मोहल्ले का पानी पिलाया जाए जब तक वे खुद न मान लें कि अमृत योजना में 'विष' का मिश्रण सरकारी गाइडलाइन का हिस्सा नहीं है।
बड़े अधिकारियों के तबादलों के इस सर्कस को बंद कर अगर 'जवाबदेही' को भी 'नंबर वन' बना दिया जाए तो शायद किसी और भगीरथ को अपने मोहल्ले के पुरखों को तारने के लिए श्मशान न जाना पड़े वरना याद रखिए, इतिहास केवल आपके रंगे-पुते डिवाइडर याद नहीं रखेगा, वह उन पाइपों के बारे में भी लिखेगा जिन्होंने शहर की साख को गटर में बहा दिया। आज इंदौर कल कोई दूसरा शहर लीकेज का माइलेज अखबार की इबारत बनता रहने से रोकना है तो तकनीकी प्रोजेक्ट्स को राजनीति से दूर करना होगा।

जिन्दगी का हिसाब...!

आईए जिन्दगी का कुछ हिसाब करते हैं,
पल-पल बीत गया उसकी बात करते हैं।
कोई भी नया मिलें तो मुलाकात करते हैं,
यूं कोई बिछड़ गया उसको याद करते हैं!
ए जिन्दगी तुझसे हम कोई बात करते हैं।

आईए जिन्दगी का कुछ हिसाब करते हैं,
पल-पल बीत गया उसकी बात करते हैं।
कोई हमसे रूठा हैं उसकी बात करते हैं,
जो हमसे बिछड़ गया शिकायत करते हैं!
ईश्वर उसे मिला दे हम फ़रियाद करते हैं।

आईए जिन्दगी का कुछ हिसाब करते हैं,
पल-पल बीत गया उसकी बात करते हैं।
धैर्य-हौसला-साहस एवं हिम्मत की हमने,
जाने कैसे संघर्षों से जिंदगी जी हैं हमने!
दुनिया में नफरतों से भी प्रेरणा ली हमने।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

SPL सीजन-14 का खिताब माइको पावर हिटर ने जीता

जगदीश सीरवी

सूरत। सीरवी समाज सूरत के तत्वावधान में सीरवी स्पोर्ट क्लब सूरत द्वारा आयोजित सीरवी प्रीमियर लीग (SPL) सीजन-14 का भव्य एवं सफल समापन सूरत शहर में सम्पन्न हुआ। इस क्रिकेट प्रतियोगिता में समाज की 12 टीमों के 180 खिलाड़ियों ने भाग लिया और खेल प्रतिभा के साथ अनुशासन व भाईचारे का परिचय दिया।

समापन समारोह में समाज के अध्यक्ष श्री हेमाराम पंवार ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल युवाओं को जोड़ने का सशक्त माध्यम है और यही समाज के उज्ज्वल भविष्य की दिशा तय करता है। सचिव भंवरलाल भायल ने कहा कि पूरे टूर्नामेंट के दौरान खिलाड़ियों ने अनुशासन और एकता की मिसाल पेश की, जो समाज के लिए गर्व की बात है। कोषाध्यक्ष हेमराज मुलेवा ने आयोजन में सहयोग देने वाले सभी पदाधिकारियों, खिलाड़ियों और समाजबंधुओं के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर समाज की ओर से स्पोर्ट्स कमेटी का साफा पहनाकर सम्मान किया गया।

मीडिया प्रभारी पेमाराम सोयल ने जानकारी देते हुए बताया कि सुबह खेले गए पहले सेमीफाइनल में माइको पावर हिटर ने रेज़ोन को पराजित किया, जबकि दूसरे सेमीफाइनल में SKS सुपर स्टार ने मून स्टार को हराया। दोपहर 4 बजे खेले गए फाइनल मुकाबले में माइको पावर हिटर और SKS सुपर स्टार आमने-सामने रहे। माइको पावर हिटर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 128 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करते हुए SKS सुपर स्टार निर्धारित स्कोर तक नहीं पहुँच सकी और इस प्रकार SPL सीजन-14 का खिताब माइको पावर हिटर ने जीत लिया। टूर्नामेंट में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को विशेष पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। बेस्ट बल्लेबाज का पुरस्कार सुरेश होम्बड (मून स्टार) को, बेस्ट गेंदबाज का पुरस्कार राजेश लचेटा (रेज़ोन) को, बेस्ट फील्डर का पुरस्कार प्रकाश चौधरी (R9 सुपर किंग) को प्रदान किया गया, जबकि मोस्ट वैल्यूबल प्लेयर का खिताब भी सुरेश होम्बड को मिला। संजय राठौड़ ने बताया कि टूर्नामेंट का उद्देश्य युवाओं को खेल के माध्यम से जोड़ना, आपसी भाईचारे को मजबूत करना और स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करना रहा। इस आयोजन में पूर्व पदाधिकारी, समाजबंधु, महिला मंडल, नवयुवक मंडल एवं भामाशाहों की उल्लेखनीय सहभागिता रही, जिससे कार्यक्रम को व्यापक समर्थन मिला। दर्शकों ने सफल आयोजन के लिए स्पोर्ट क्लब का आभार व्यक्त किया।

मो बस एक्सीडेंट और ड्राइवरों की लापरवाही; सरकार एक्शन मोड

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मो बसों में बार-बार हो रहे हादसों के बाद, डिपार्टमेंट एक्शन मोड में है। इससे निपटने के लिए बनी हाई-लेवल कमेटी की मीटिंग हो चुकी है। हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट डिपार्टमेंट की प्रिंसिपल सेक्रेटरी उषा पाधी की अध्यक्षता में कृत ऑफिस में हुई मीटिंग में पैसेंजर और रोड यूज़र्स की सेफ्टी, पैसेंजर-फ्रेंडली हमारी बस सर्विस और ड्राइवरों के ओवरऑल डेवलपमेंट पर फोकस किया गया ।यात्रियों की सुरक्षा और पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए मीटिंग में यह तय किया गया है कि BPTSL की 30 पुरानी बसें, जो 1.5 लाख किलोमीटर से ज़्यादा चल चुकी हैं, उन्हें स्क्रैप कर दिया जाएगा। उनकी जगह कटक और भुवनेश्वर में आम लोगों के लिए छोटी ई-बसें सड़कों से जोड़ी जाएंगी। इसमें ट्रांसपोर्ट कमिश्नर अमिताभ ठाकुर, क्रू मैनेजमेंट ऑफिसर श्री संजय विशाल, कमिश्नरेट पुलिस के DCP, ट्रैफिक DCP मौजूद थे।

जनवरी के पहले दो हफ़्तों में हमारी बसों की स्पीड लिमिट पर नज़र रखने के बारे में चर्चा हुई। हमारी किसी भी बस ने इस नियम को तोड़ने का कोई मामला नहीं देखा है। बस स्टॉप पर हमारी बसों की जगह पर भी चर्चा हुई। इसके अलावा, ड्राइवरों को ई-बस ऑपरेशन की सही ट्रेनिंग दी जाएगी ।इसी तरह, कैप्टन और गाइड के लिए इंसेंटिव अमाउंट 26 जनवरी से लागू किया जाएगा। यह अमाउंट ड्राइवरों की सेफ ड्राइविंग और उनके काम को अलग-अलग एंगल से जांचने के बाद हर तीन महीने में एक बार दिया जाएगा। हमारे बस रूट्स में पब्लिक पार्टिसिपेशन फरवरी से शुरू होगा। रूट बदलने पर आम लोगों से सोशल मीडिया के ज़रिए राय ली जाएगी। आम बस एक्सीडेंट्स को देखते हुए प्रिंसिपल सेक्रेटरी श्रीमती पाधी की अध्यक्षता में एक हाई-लेवल कमेटी बनाई गई है और हर 15 दिन में आम बस ऑपरेशन्स का रिव्यू करने का फैसला किया गया है।

जहाँ कक्षा बंद है और नारा ज़िंदा

शिक्षा के काग़ज़ी जहाज़
सत्ता की नहर में डुबोए जा रहे हैं,
कक्षाओं पर ताले जड़ दिए गए हैं
और मैदानों में नारे बोए जा रहे हैं।

कितने मौसम और बीतेंगे
मुफ़्त की थाली के भरोसे?
कब पूछेगा तू—
मेरे बच्चे सोच से क्यों खाली हो रहे हैं?

जिस्म सलामत हैं सबके,
पर सपनों का क्या होगा?
जब सवाल ही मर जाएँ भीतर,
तो आने वाला कल किसका होगा?

मुफ़्त की थाली ने
रीढ़ की हड्डी चबा ली है,
जो कल तक आँखों में आग था,
आज उसकी ज़ुबान सिला दी है।

जिस्म सही-सलामत हैं,
दिमाग़ अपाहिज कर दिए गए,
सल्तनत की उम्र बढ़ाने को
नागरिक नहीं—अनुयायी गढ़े गए।

समय रहते पूछ ले, ऐ आदमी—
ये ख़ामोशी किसकी जीत है?
सौरभ आज भी याद आते हैं,
क्योंकि हर चुप्पी
एक साज़िश होती है।

– डॉ. प्रियंका सौरभ

आदित्यपुर के बिजनेसमैन के बेटे का अपहरण, इंडोनेशियाई नंबर से पांच करोड़ फिरौती की मांग

जमशेदपुर ,सरायकेला पुलिस जांच में जुटी

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड -झारखंड में

सरायकेला , झारखंड का औधोगिक क्षेत्र आदित्यपुर , जमशेदपुर के बिजनेसमैन और आदित्यपुर स्मॉल इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के उपाध्यक्ष देवांग गांधी के 24 साल के बेटे कैरव गांधी का अपहरण फिरौती के लिए की गई। उनसे अपहरणकर्ताओं ने इंटरनेट कॉलिंग कर 5 करोड़ रुपए फिरौती के रूप में मांगे ।बिजनेसमैन देवांग गांधी को इंडोनेशिया के नंबर (+62-831-94765544) से कॉल आया था। बुधवार को जब कैरव गांधी के गायब होने की बात सामने आई तब परिजनों द्वारा अपहरण की आशंका जताए जाने के बाद भी पुलिस ने लापता का मामला माना था

जब जांच के दौरान खुलासा हुआ तब बिष्टुपुर पुलिस ने सीएच एरिया इनर सर्किल रोड नार्थ निवासी अपहृत के पिता देवांग गांधी के बयान पर इंडोनेशिया के नंबर (+62-831-94765544) के संचालक के खिलाफ अपहरण की प्राथमिकी दर्ज कर ली।

कैरव गांधी की सकुशल बरामदगी के लिए पुलिस की सात टीमें झारखंड के अलग-अलग स्थानों के अलावा बिहार, बंगाल और ओडिशा में बदमाशों की तलाश में जुटी है। कार की फॉरेंसिक जांच कर फिंगर प्रिंट के जरिए अपराध में शामिल बदमाशों की पहचान की कोशिश की जा रही है ।वहीं, कॉल डिटेल और उस क्षेत्र में उस समय सक्रिय मोबाइल फोन की कॉल डंपिंग के जरिए जानकारी इकट्ठा की जा रही है।

पुलिस अखिलेश गिरोह के पूर्व शागिर्द पर भी शक कर रही है जो अभी बिहार में रह रहा है। पुलिस टीम संभावित स्थानों पर छापेमारी कर रही है ।एक टीम सीसीटीवी कैमरों को खंगाल रही है, दूसरी टीम परिवार वालों के संपर्क में है। जबकि, एक टीम सर्विलांस और मोबाइल की गतिविधियों पर नजर रखे हुए है।

जमशेदपुर के अलावे सरायकेला पुलिस की टीम भी जांच में लगी है ।कांदरबेड़ा के बाद से टोल प्लाजा का फुटेज पुलिस ने खंगाला। रांची की ओर पाटा टोल प्लाजा और कोलकाता की ओर जाने वाले गालूडीह के टोल प्लाजा की फुटेज की पुलिस जांच कर रही है।

बीते मंगलवार को आदित्यपुर ऑटो क्लस्टर में 16 जनवरी को होने वाले कार्यक्रम को लेकर बैठक चल रही थी। इस बैठक में औधोगिक समुह 'एसिया' के उपाध्यक्ष देवांग गांधी भी शामिल थे ।मीटिंग दो घंटे तक चली। इस दौरान लगभग 8 से 10 बार वाट्सएप कॉल आया, लेकिन उन्होंने रिसीव नहीं किया ।कुछ कॉल को कट कर दिया ।बैठक के बाद दिन के दो बजे के लगभग वे घर पहुंचे। घर पर बेटे कैरव गांधी के बारे में जानकारी लेने के लिए फोन किया तो उसका फोन बंद मिला।

इसके बाद जिन वाट्सएप नंबर से कॉल आया था। उस नंबर पर कॉल किया तो स्विच ऑफ मिला। इसके बाद कंपनी में फोन कर पता लगाया तो खबर मिली कि उनका बेटा कंपनी नहीं पहुंचा ।एक चेक लेकर बैंक जाने की बात कही थी, लेकिन वह बैंक भी नहीं पहुंचा ।फिर देवांग गांधी ने मोबाइल में मैसेज की लिस्ट खोली तो उसी नंबर से एक टैक्सट मैसेज मिला, जिसमें बेटे की अपहरण की बात लिखी गई थी।

बिष्टुपुर थाने में फिरौती के लिए अपहरण का मामला दर्ज कराया गया है। पुलिस ने घटना के बाद कैरव गांधी से घर से निकलने से लेकर कांदरबेड़ा जाने तक के मार्ग का सीसीटीवी फुटेज खंगाला। पुलिस जांच में पता चला कि कैरव की कार के आगे-पीछे एक ही नंबर की स्कॉर्पियो कई बार गुजरी। स्कॉर्पियो पर पुलिस का नंबर प्लेट लगा हुआ था।

स्कॉर्पियो पर लगे नंबर की जांच की गई तो वह किसी बाइक का नंबर था ।आशंका यह लगाया जा रहा है कि टोल प्लाजा से बचने के लिए अपहरणकर्ताओं ने पुलिस का बोर्ड लगाया था। पुलिस की टीम चांडिल से आगे रांची, रामगढ़ से बिहार को जाने वाले रास्ता का फुटेज खंगाल कर स्कॉर्पियो का पता लगाने में जुटी है।

रांची के ईडी कार्यालय में जांच हेतु पहुंचीं पुलिस, ईडी ने की थी अभियुक्त के साथ मारपीट

बंगाल की तरह राजनीतिक रंग चढ़ने लगा है पुलिस बनाम ईडी मामला

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, : पश्चिमी बंगाल सरकार एवं ईडी के बीच आईपैक (Indian Political action Committee) का मामला अभी शान्त होने के बजाय जब आज जब सुप्रीम कोर्ट ने उसे अति गंभीर कह दिया है एवं कारवाई करने से स्वयं का हाथ खींच खींचने जा रहा है । ऐसे में झारखंड में भी एक चौंकाने वाली वारदात ईडी बनाम झारखंड पुलिस के बीच जारी है ।अब यह बंगाल की तरह झारखंड में राजनीतिक रंग चढ़ना लाजमी होगा । अंततः जब कोर्ट में पहुंचेगा वह किस रूप लेगा देखना बड़ी दिलचस्प होगा । झारखंड के ईडी कार्यालय के अधिकारियों से कथित मारपीट की शिकायत की जांच में रांची पुलिस की टीम ईडी कार्यालय आज सुबह पहुंची।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों के साथ कथित मारपीट की शिकायत की जांच के सिलसिले में गुरुवार सुबह रांची पुलिस की एक टीम यहां स्थित ईडी के जोनल कार्यालय पहुंची। सूत्रों के मुताबिक, यह कार्रवाई दर्ज शिकायत के आधार पर की जा रही ।जानकारी के अनुसार, राज्य के पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के एक पूर्व कर्मचारी संतोष कुमार ने 12 जनवरी को रांची के एयरपोर्ट थाना में आवेदन दिया था। जिसपर 20 करोड़ के करीब हेराफेरी का आरोप है ।संतोष की ओर से दर्ज प्राथमिकी के अनुसार, संतोष को 12 जनवरी को सुबह 10 बजे ईडी कार्यालय में उपस्थित होने का निर्देश मोबाइल फोन पर दिया गया था। वह सुबह 9.45 बजे ईडी कार्यालय पहुंचा ।आरोप है कि दोपहर करीब 1.35 बजे असिस्टेंट डायरेक्टर प्रतीक ने उन्हें अपने केबिन में बुलाया, जहां पहले से शुभम मौजूद थे। पूछताछ के दौरान उनसे आरोप स्वीकार करने का दबाव बनाया गया। मना करने पर दोनों अधिकारियों ने कथित रूप से उनके साथ मारपीट की गई और गालियां दीं ।पिड़ित ने यह भी आरोप लगाया है कि उनसे 16 जनवरी को दोबारा ईडी कार्यालय में पेश होने से संबंधित आवेदन जबरन लिखवाया गया। रात 10.45 बजे तक उन्हें कार्यालय में रोके रखा गया, ताकि वे घटना की सूचना अपने परिवार, वकील, थाना या मीडिया को न दे सकें ।छोड़ते समय भी उन्हें और उनके परिवार को जेल भेजने की धमकी दी गई। इधर, एयरपोर्ट थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

आवेदन में आरोप लगाया गया है कि कथित जलापूर्ति घोटाले से जुड़े एक मामले में पूछताछ के दौरान ईडी अधिकारियों ने उसके साथ मारपीट की।

सूत्रों ने बताया कि जांच के लिए पहुंची पुलिस टीम में डीएसपी रैंक के अधिकारी के साथ एयरपोर्ट थाना प्रभारी भी शामिल रहे । पुलिस टीम ईडी कार्यालय में मौजूद तथ्यों की जांच कर रही थी ।हालांकि, इस पूरे मामले पर रांची पुलिस की ओर से अब तक कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है ।

यह घटनाक्रम ऐसे समय सामने आया है, जब हाल ही में पश्चिम बंगाल पुलिस और ईडी अधिकारियों के बीच टकराव की स्थिति बनी हुई है । उस दौरान ईडी ने राजनीतिक परामर्श फर्म आई-पैक के कार्यालय और उसके प्रमुख प्रतीक जैन के आवास पर छापामारी की गयी थी , जिसमें जबरन प्रवेश और दस्तावेज चोरी के आरोप लगे थे ।मामले की गंभीरता को देखते हुए ईडी कार्यालय के आसपास केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के जवानों की तैनाती की गई है, ताकि किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटा जा सके।

इस बीच झारखंड विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने पुलिस की इस कार्रवाई पर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि पुलिस कार्रवाई की आड़ में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से जुड़े भ्रष्टाचार मामलों के अहम साक्ष्यों से छेड़छाड़ या उन्हें नष्ट करने का प्रयास हो सकता है। मरांडी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर कहा कि एयरपोर्ट रोड स्थित ईडी कार्यालय में हजारों करोड़ रुपये के भ्रष्टाचार मामलों से जुड़े महत्वपूर्ण दस्तावेज मौजूद हैं।

गौरतलब है कि जनवरी 2024 में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कथित भूमि घोटाले से जुड़े धनशोधन मामले में दिल्ली स्थित अपने आवास पर की गई तलाशी को लेकर ईडी के वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ रांची के एससी-एसटी थाना में शिकायत दर्ज कराई थी। एफआईआर के अनुसार, मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया था कि ईडी की कार्रवाई उन्हें और उनके समुदाय को परेशान और बदनाम करने के उद्देश्य से की गई।

मुख्यमंत्री ने इस पूरे प्रकरण में झारखंड उच्च न्यायालय में सीबीआई जांच की मांग भी की थी। ईडी अधिकारियों द्वारा एससी-एसटी अधिनियम के उल्लंघन के आरोपों से जुड़ा यह मामला फिलहाल न्यायालय में विचाराधीन है।

उधर केंद्रीय मंत्री संजय सेठ ने कहा है जब भ्रष्टाचारी अभियुक्त को ईडी ने बुलाया ही नहीं था तो वह ईडी के कार्यालय में पहुंचा क्यो ? मामला कुछ भी हो अब बंगाल की तरह राजनीतिक रंग चढ़ना लाजमी है ।

अंगुल प्रशासन का NALCO प्रेम केलिए आम लोगों जेल पर

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : अंगुल प्रशासन का NALCO प्रेम। नेचुरल कैनाल का रास्ता बदलने के लिए सर्वे के बहाने उत्कल-ए कोयला खदान के लिए सड़क बनाने का काम चल रहा है। विरोध करने पर पुलिस ने स्थानीय गांववालों को गिरफ्तार कर लिया। ऐसी ही टकराव की स्थिति अंगुल निशा शिल्पाचल पुलिस स्टेशन के तहत आने वाले गोपीबल्लवपुर गांव में देखी जा सकती है।

गांववालों के मुताबिक, मंगलवार को NALCO के कॉन्ट्रैक्टर मैत्री इंफ्रास्ट्रक्चर एंड माइनिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड और पुलिस फोर्स की तीन प्लाटून के साथ जिला प्रशासन के कई अधिकारी JCB मशीन लेकर गांव पहुंचे।

उनका कहना था कि वे उत्कल-ए कोयला खदान से होकर बहने वाली नेचुरल कैनाल का रास्ता बदलने के लिए सर्वे करने आए थे। लेकिन सर्वे के बहाने उन्होंने गांववालों के खेत के बीच में JCB लगाकर सड़क बनाना शुरू कर दिया। इस बीच, गोपीबल्लवपुर के गांववालों ने कोयला खनन के मकसद से गांव से ली गई जमीन का विरोध किया, क्योंकि उन्हें खदान में सही मुआवजा और नौकरी नहीं दी गई। इससे अशांति फैल गई। रोजगार देने के बजाय नाल्को के ठेकेदार पर जिला प्रशासन की मदद से 16 गांववालों को जबरन गिरफ्तार कर जेल में डालने का आरोप है। इसके विरोध में गांववाले आज नाल्को ऑफिस के सामने प्रदर्शन करेंगे।

38 नि:शुल्क मोतियाबिन्द के ऑपरेशन सम्पन्न सर्दी से बचाव के लिए सभी रोगियों को कम्बल किये वितरित

अनूप कुमार शर्मा परिवहन विशेष

भीलवाड़ा लायंस क्लब भीलवाड़ा द्वारा संचालित लायंस आई हॉस्पिटल भीलवाडा एवं भैरूनाथ सेवा समिति (चलानिया) भीलवाडा के संयुक्त तत्वावधान में नि:शुल्क नेत्र शिविर में नि:शुल्क नेत्र जाँच एवं ऑपरेशन शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इसी क्रम में आगामी 18 जनवरी 2026 रविवार को मंगरोप में जरूरतमंद व्यक्तियों के लिये नि:शुल्क विशाल नेत्र जाँच एवं लैंस प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया जायेगा।

क्लब अध्यक्ष, अधिवक्ता पवन पंवार ने जानकारी दी कि शिविर में कुल 101 रोगियों की आँखों की जाँच की गई। लायंस आई हॉस्पिटल में डॉक्टर्स टीम द्वारा सभी 38 चयनित रोगियों के सफल ऑपरेशन किए गए।

लायन एडवोकेट ललित सांखला ने बताया कि प्रोग्राम की अध्यक्षता क्लब अध्यक्ष पवन पंवार एडवोकेट ने की, मुख्य अतिथि लायन त्रिलोकचन्द छाबड़ा (आरसीएम गुरप) एवं विशिष्ट अतिथि एवं भामाशाह लायन एन.के. जैन द्वारा सभी चयनित रोगी जिनका ऑपरेशन हुआ उनको कम्बल वितरण किया गया।

लायन हॉस्पिटल के हॉस्पिटल प्रभारी लायन जे.के. बागड़ोदिया व एल.बी. रांका ने बताया कि ऑपरेशन के बाद सभी रोगियों को आवश्यक दवाइयाँ, नि:शुल्क चश्मे और डिस्चार्ज टिकट देकर आज ससम्मान उनको अपने घर के लिए रवाना किया गया।

मुख्य अतिथि लायन त्रिलोकचन्द छाबड़ा ने अपने उद्बोधन में लायन क्लब भीलवाड़ा द्वारा जरूरतमंदों की निस्वार्थ सेवा की प्रशंसा की एवं नेत्रदान को महादान बताकर प्रत्येक व्यक्ति को मरणोपरान्त नेत्रदान करने हेतु फॉर्म अवश्य भरने हेतु प्रेरित किया एवं चयनित रोगों को अपने आंखों की सुरक्षित रखने हेतु आवश्यक जानकारी दी।

अध्यक्ष पवन पंवार ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए यह आश्वासन दिया कि लायंस क्लब भीलवाड़ा वर्षभर जरूरतमंद व्यक्तियों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहेगा एवं प्लास्टिक मुक्त भारत के लिए कपड़ों के थैले वितरित किये गये। प्रोग्राम का सफल संचालन लायन एडवोकेट ललित सांखला ने किया।

शिविर को सफल बनाने में अस्पताल प्रभारी लायन जे.के. बागडोदिया, लायन एल.बी. रांका, लायन विनोद जैन, लायन वी.के. मानसिंहका, लायन एडवोकेट ललित सांखला, लायन एन.के. जैन सहित सभी लायंस सदस्यों, पदाधिकारियों एवं भैरूनाथ सेवा समिति (चलानिया) भीलवाडा के अध्यक्ष सांवर गुर्जर सहित समस्त पदाधिकारी व हॉस्पीटल स्टॉफ राकेश दुग्गड़, कैलाश शर्मा, राहुल मय स्टॉफ का प्रशंसनीय सहयोग रहा।

लायन्स क्लब भीलवाड़ा सिटी ने बच्चों को किए स्वेटर वितरित

सेवा कार्यक्रम के तहत बापू नगर विधालय में आयोजित हुआ कार्यक्रम, मात-पिता और गुरुओं के चरण वंदन के बारे दी जानकारी

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा लायन्स क्लब द्वारा सेवा कार्यक्रम के तहत महात्मा गांधी रा.विद्यालय बापू नगर में गरीब बच्चों को स्वेटर वितरित किए गये। इस दौरान क्लब के अध्यक्ष अतुल राठी ने डिजीटल पुस्तकालय बनवाने का आश्वासन दिया और पूर्व प्रान्तपाल दिलीप तोषनीवाल ने बच्चों को मात पिता और गुरुओं के चरण वंदन के बारे में बताया। लायन्स क्लब भीलवाड़ा के अध्यक्ष पवन पंवार ने भी बच्चों को मेहनत करने और नम्र रहने की सलाह दी। स्कूल की प्रधानाचार्य सारिका चतुर्वेदी ने सभी पधारे हुए मेहमान जनों का स्वागत और अभिनंदन किया। कार्यक्रम में सदस्य सुरेश बिड़ला, गजानंद बजाज, विजय सिसोदिया, विशाल बाहेती, सुशील सिसोदिया, विनोद जैन, शिव जागेटिया और धर्मेन्द्र लाठी उपस्थित रहे। अन्त में क्लब के सचिव दिनेश सोनी ने सभी उपस्थित साथियों का आभार व्यक्त किया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023